ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ां

पठान

(स्केच)

लेखक : ग़नीख़ान

अनुवादक : उपेन्द्रनाथ अश्क

नेशनल इन्फ़रमेशन ऐण्ड पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई

समर्पण

मैं यह पुस्तक सारे पठानों में से सबसे
पहले जानेहुए और सबसे अच्छे
पठान, अपने **पिताजी,**
को समर्पित करता हूं।

अनुक्रमणिका

परिचय

अपने किसी प्रिय प्रसंग को लिपि-बद्ध करते समय जो कठिन समस्या प्रायः लेखक के समक्ष उपस्थित होती है, वह यह है कि उसे प्रारम्भ कैसे किया जाय? ठीक उसी प्रकार, जैसे प्रायः वक्ता के लिए इस बात का निर्णय करना कठिन हो जाता है कि वह कहाँ बोलना बन्द करे और बैठ जाए?

सामने कोरा कागज़ पड़ा प्रायः उलझन पैदा करने लगता है। लेखक लाख चाहता है कि अपने विचारों के उबलते हुए झरनों को कागज़ पर बहा दे, किन्तु कैसे और कहाँ से? इस बात का निर्णय करना उसके मार्ग की रुकावट बन जाता है।

यही समस्या अब मेरे सामने उपस्थित है। सीमांत के पठानों पर मैं कुछ लिखना चाहता हूँ, किन्तु प्रारम्भ कहाँ से करूं, यह नहीं सोच पाता। पठान से मुझे स्नेह है, इसलिए इस बात का निर्णय करना और भी दुष्कर हो गया है। मैं चाहता हूँ, आप भी मेरी भाँति उससे स्नेह करने लगें, किन्तु पठान के प्रति स्नेह उत्पन्न होना इतना सुगम नहीं। वह जितना सीधा-सादा दिखाई देता है, उतना ही जटिल भी है। उसकी इस जटिल-सरलता को समझने के लिए उसे अच्छी तरह जानना अनिवार्य्य है। ख़ैबर की ऊँची चोटियों और हुशनागढ़ के लहलहाते खेतों से उठाकर मैं उसे आपके सामने ला उपस्थित करना चाहता हूँ—जीर्ण-शीर्ण चीथड़ों में आवृत्त, घास के जूते पहने हुए, आँखों में पुरुषत्व, क़हक़हे और शरारत, मस्तिक में बालोचित् किन्तु उच्च और पवित्र आत्माभिमान् (जिसकी ओट में वह सदैव अपनी विपन्नता और अभाव छिपाए रखता है।)—यह है पठान! चाहता हूँ कि उसका ऐसा वास्तविक सजीव

चित्र आपके समक्ष खींच दूँ जो आपको उसके जीवन-संघर्ष और अनन्त सपनों, उसके प्रेम और प्रतिद्वन्द्विता, उसके खेतों और मचानों, उसकी नयी बन्दूक़ और पुरानी पत्नी के विषय में सब कुछ बता दे !

आप मानेंगे कि यह चित्रांकन और इसे आरम्भ करने के विषय में असमंजस स्वाभाविक है, किन्तु आपको पठान से उसकी समस्त जटिलता और सरलता के साथ परिचित कराने के लिए मैंने एक स्कीम बना रखी है—मैं उसके लोक-गीत आपको सुनाऊँगा, ताकि आप उसके हृदय के स्पन्दन को अनुभव कर सकें, वह आपको अपने प्रदेश की परियों की कहानी सुनाएगा, ताकि आप जान सकें कि वह अपने बच्चे को कैसी बातें सुनाता है। मैं उसके देहात की घटना, उसी की ज़बानी आपको सुनाऊँगा, ताकि आप जानें कि उसका दैनिक जीवन कैसे व्यतीत होता है; वह आपको चाँद की बातें बताएगा और आपको पता चल जाएगा कि वह प्रेम कैसे करता है। वह आपको अपने रीति-रिवाज से परिचित करेगा और आप उसके सामाजिक जीवन का परिचय पा जाएँगे। वह आपको डाकों, लूटमार, आपसी झगड़ों की कहानी सुनाएगा और आपको उन शक्तियों का पता चल जायगा जो उसके पारद ऐसे स्वभाव को भड़काया करती हैं; मुल्लाओं, उनके जादू-टोनों और गंडे तावीज़ों की बात सुनकर आपको उसके अन्तर की गहन-तमिस्र का पता चल जाएगा। वह आप को जीवन-मरण, पाप-पुण्य के विषय में अपने विचार बताएगा और मुझे विश्वास है कि तब तक आपको उसके मनोविज्ञान का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त हो जाएगा। तब मैं आपके और उसके बीच टपक पड़ूंगा और बताऊँगा कि आपसे उसका कैसा घनिष्ट सम्बन्ध है और किस प्रकार आपका भविष्य उसके अस्तित्व से सम्बद्ध है, क्योंकि आपको पसन्द हो या न हो, वह आपका पड़ोसी है और आपके देश की उस सीमा पर बसता है जो रूस के समीप है। आपको पठान से अच्छी तरह परिचित होना चाहिए; क्योंकि यदि रूस या उसके प्रभाव आएँगे, तो पहले उसीके यहाँ आएँगे और यह बात आपको भूलनी न चाहिए कि भविष्य के निर्माण में रूस का भाग कम न होगा।

तो लीजिये अपने इस सरल, पर जटिल पड़ोसी से मिलिए। वह सुन्दर-सी पगड़ी और पेच-दर-पेच घेर वाली शलवार पहने हुए है। उसकी आकृति को ध्यान से देखिए, किन्तु मेरा विचार है, इससे पहले आपको उसके असल-नसल के बारे में कुछ बातें जान लेनी चाहिएँ।
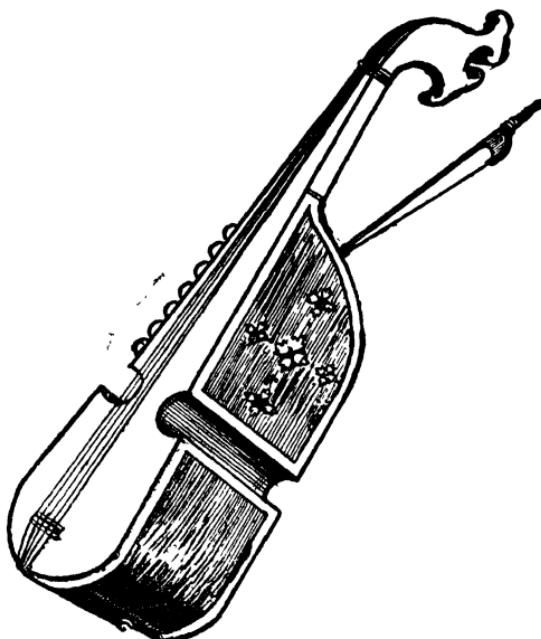
इतिहास

प्राय: लोग पठान की नाक को एक नज़र देखते हैं और निर्णय दे देते हैं कि वह यहूदी जाति से है। उनके इस निर्णय का कारण यह है कि वे उसे किसी दूसरी जाति से मिला नहीं पाते। बाह्यरूप से यह बात सच भी लगती है। इस्लाम में पठानों का विश्वास और इ · विश्वास के फल-स्वरूप उसके जीवन पर उसका अनिवार्य्य प्रभाव, इस बात की दृढ़ता भी प्रदान करते हैं, क्योंकि इस्लाम के अनुयायी भी यहूदियों के नबी को मानते हैं। किन्तु इस बात के बावजूद वे आधारभूत सिद्धान्त जो पठान के जीवन में आदिकाल से आज तक परिचालित हैं, (चाहे जिस जाति या वंश का शासक उस पर शासन करता रहा हो) यहूदियों की अपेक्षा स्पारटा (यूनान) के निर्भीक निवासियों के सिद्धान्तों से अधिक मिलते हैं।

पठान की उत्पत्ति जानने के लिये स्वयं मेरे मन में बड़ी उत्सुकता थी। प्राचीनतम् लेखक जिसने पहले–पहल उसके विषय में कुछ लिखा, हेरोडोटस (Herodotus) है। और हेरोडोटस के लालबुझक्कड़पन के सम्बन्ध में यह प्रसिद्ध है कि वह जो सुनता था, उसे सत्य मान लेता था और जो सत्य मान लेता था, उसका एक-एक शब्द लिख देता था।

हेरोडोटस ने पठानों के प्रान्त को बख्तिया (Bectia) का नाम दिया है, और लिखा है कि उस प्रदेश में ठिंगने कृष्ण–वर्ण निवासी बसते हैं जो सोने और गर्म मसाले का व्यापार करते हैं। यह सोना वे अपने जीवन को संकट में डालकर मरुस्थल से इकट्ठा कर लाते हैं, जहाँ कुत्तों जितने बड़े–बड़े चिउँटे होते हैं। इस स्वर्ण-भूमि पर दिन के समय इतनी प्रचंड गर्मी होती है कि ऊँटों के अतिरिक्त कोई दूसरा पशु इस गर्मी को सहन नहीं कर सकता। ये चिउँटे जो रात के समय ज़मीन की गहराइयों से सोना बाहर

लाते हैं, दिन के समय लौट कर अपने बिलों में जा छिपते हैं। तब वहाँ के कृष्ण-वर्ण निवासी अपने ऊँटों पर चढ़ दौड़ते हैं और सोना एकत्र करके इन मनुष्य-भक्षी चिउँटों के बाहर आने से पहले-पहले भाग जाते हैं। कई लोग धूप की इस तीव्रता में समाप्त भी हो जाते हैं, किन्तु कुछ इस अमूल्य निधि के साथ बच निकलते हैं।

इस कथन से इन बातों का पता चलता है:—

१. बख्तयानी यूनानियों जैसे योद्धा तो न थे, किन्तु अपेक्षाकृत अच्छे गप्पी और लफाड़िये थे।
२. सिकन्दर महान् के से प्राचीन समय में भी व्यापारिक प्रणाली और एकाधिकार (इज़ारा) स्थापित था।
३. इस मत को सिद्ध करने के लिए कि पठान और यहूदी एक ही जाति की उत्पत्ति हैं, हेरोडोटस का यह बयान ही एक मात्र प्रमाण है।
४. हेरोडोटस बेचारा बिलकुल सच्चा है। इसीलिए उसने दुनिया भर के झूठ एक जगह इकट्ठे कर दिए हैं। बात वास्तव में यह है कि संसार में सदैव दोनों प्रकार के लोग होते हैं—गप्पी लफाड़िये भी और उनकी गप्पों पर विश्वास कर लेनेवाले सरल हेरोडोटस भी।

हेरोडोटस के इस वक्तव्य से इस बात का भी पता चलता है कि जिस प्रान्त को उसने बख्तिया (Becta) का नाम दिया है (भौगोलिक ज्ञान हेरोडोटस को नाम मात्र ही था, सभी गप्पियों का भौगोलिक ज्ञान ऐसा ही होता है, आर विश्वास कीजिये हेरोडोडस से बड़ा गप्पी यूनानी साहित्य में नहीं मिलता।) वहाँ जो निवासी अब बसते हैं, वे न ठिंगने हैं, न कृष्ण-वर्ण और न चालाक व्यापारी। इसके विपरीत वे न केवल ऊँचे-लम्बे और गौर-वर्ण हैं, वरन् उनकी आकृति भी सुन्दर है, और व्यापार की अपेक्षा हत्या और ख़ून में उनकी अधिक अभिरुचि है।

ऐसा लगता है कि हेरोडोटस के कुछ यूनानी मित्रों ने बख्तियायिओं पर आक्रमण करके, उनकी नदियों और घाटियों के तटों पर अपने उपनिवेश

बसाए, उनकी सुन्दर लड़कियों से शादियाँ कीं और अपने बच्चों को युद्ध और वीरता, मृत्यु और गौरव की बातें सुना-सुना कर बड़ा किया, क्योंकि पठान बड़े से बड़ा अपराध क्षमा कर सकता है, यदि वह वीरता से किया गया हो। पठान देहातों के नाम यूनानी हैं, पठान कबीलों के रीति-रिवाज यूनानी हैं, यूनानियों ही की भाँति पठान कविता-प्रेमी और निपुण योद्धा है और यूनानियों ही की भाँति उसके समस्त युद्ध स्त्री के निमित्त होते हैं।

पठानों का कोई लिखित प्राचीन इतिहास नहीं, किन्तु सहस्रों खण्डहर हैं, जो सुननेवाले को अपनी मौन भाषा में अपनी कहानी और इतिहास सुनाते हैं।

प्राचीन खण्डहर जो देखने को मिलते हैं, यहूदी आक्रमणकारियों के आगमन से पहले के हैं। कल्पना और निर्माण शैली की दृष्टि से, वे उन खण्डहरों से आश्चर्यजनक रूप से मिलते हैं, जो यू० पी० और उड़ीसा में पाए जाते हैं। उदाहरणार्थ, उन खण्डहरों पर गुड़ियों और देवी-देवताओं की मूर्तियाँ (जिसे एक-जैसा बनाने में मनुष्य को अपूर्व सिद्धि प्राप्त है।) आज कल के पठानों की आकृति से सर्वथा भिन्न हैं।

किन्तु जब हम बुद्धमत के समय, या यूनानी-बुद्ध समय के खण्डहरों को देखते हैं तो उस समय के बुद्धों, राजाओं, गुड़ियों, देवी-देवताओं और आजकल के पठानों की आकृति में आश्चर्यजनक समानता पाते हैं। आजकल के पठानों की क्रूरता और कठोरता भी सम्भवतः पठानों में दीर्घकाल बुद्ध-मत के स्थायित्व और उसकी अहिंसा की प्रतिक्रिया का ही रूप है।

जहाँ तक जाति का सम्बन्ध है पठान निश्चय ही यूनानी जाति से है—ऐसी यूनानी जाति जो यूनानी पुरुष और न जाने किस-किस जाति की स्त्री के संयोग का परिणाम है। यह स्त्री किस जाति की थी, इस विषय में मुझे कुछ पता नहीं चल सका और इस बात को जानने की उत्सुकता भी, मेरे विचार में, व्यर्थ है। पाँच हज़ार वर्ष पूर्व पठान क्या था, इससे मुझे अधिक तात्पर्य नहीं। इतना स्पष्ट है कि इस्लाम ग्रहण करने से पहले वह बुद्धमत का अनुयायी था और बुद्धमत की दीक्षा लेने से पूर्व वह हिन्दू था। हालाँकि उसने बुद्धमत की सहस्रों मूर्तियाँ बनाईं, किन्तु इसके बावजूद यह निश्चय से नहीं कहा जा सकता कि वह बुद्धमत का आदर्श अनुयायी

था, क्योंकि वह अचूक निशानेबाज़ और अनाड़ी सैनिक है। वह इतना स्वतन्त्र-प्रकृति है कि किसी भी पैग़म्बर का आदर्श अनुयायी बन ही नहीं सकता। इसीलिए सम्भवतः वह पक्का मूर्तिकार और कच्चा भिक्षु था।

पठान और किसी भी जाति से क्यों न हो, किन्तु यह निश्चित है कि वह यहूदी नसल से कदापि नहीं। ऐसे यहूदी आपको संसार में कहाँ मिलेंगे जो अपने बच्चों को युद्ध और वीरता, मृत्यु और गौरव की कहानियाँ सुनाएँ? पठान के अस्तित्व में शायद उस प्रत्येक जाति का सम्मिश्रण है जो मध्य एशिया से भारत में आई—चाहे वह ईरानी हो या यूनानी, तुर्क हो या मंगोल। उसके गुण-अगुण, उसकी आकृति और विश्वास, उसके धर्म और उसके संगीत पर प्रत्येक जाति का कुछ-न-कुछ प्रभाव है। उसका स्वभाव उसकी वेशभूषा ही की भाँति सुन्दर और मनोहर है—वह एक बलवान् योद्धा है, किन्तु सैनिक बनना उसे पसन्द नहीं। संगीत से उसे प्रेम है, किन्तु संगीतज्ञ से वह घृणा करता है। उसके स्वभाव में दया और उदारता कूट-कूट कर भरी हुई है, किन्तु दूसरे उस बात को जान जाएँ, यह उसे अभीष्ट नहीं। उसके सिद्धान्त उसके विचार ही की भाँति अद्भुत हैं—वह उग्र और क्रूर भी है और विपन्न और घमंडी भी!

प्राचीन समय में वह क्या था, इस बात को जानने की उत्सुकता करने के स्थान पर, मेरे विचार में, यह जानना अच्छा होगा कि वास्तव में आज वह क्या है? वह आप का एक ऐसा भावुक पड़ोसी है, जो एक घनिष्ट मित्र भी बन सकता है और प्राण-घातक शत्रु भी! मध्य-मार्ग उसे पसन्द नहीं। यही उसका सबसे बड़ा सद्गुण है और शायद यही सबसे बड़ा अवगुण!

लोक-गीत

किसी जाति के लोक-गीत उसके अपने ऐसे आध्यात्मिक चित्र होते हैं जो उस जाति के लोगों ने स्वयं अंकित किए हों। शर्त यह है कि वह जाति इतनी प्राचीन हो कि अपने भावों और अनुभूतियों को निष्कपट होकर, दयानतदारी से व्यक्त कर सके। अनुभूति में दयानतदारी कठिन नहीं, किन्तु उसके व्यक्तिकरण में दयानतदारी दुष्प्राप्य है—विशेषतय: जब मनुष्य सुसंस्कृत हो जाता है। जब मनुष्य का सहज ज्ञान अपने आप को रीति-रिवाज के अनुसार ढालने लगता है; जब आँखें प्रियतम का मुख देखने के स्थान अपने सुननेवालों के मुख देखने लगती हैं, उस समय प्रथा संगीत पर और नैतिकता सहज ज्ञान पर छा जाती है, और प्रेम का स्थान प्रेम की कामना ले लेती है। यदि आपको पठान के लोक-गीत अत्यन्त पाशविक, नग्न और सीधे लगें तो आप यह न भूलिएगा कि उसका जीवन अत्यन्त सीधा, सरल और प्राचीन है। उसका जीवन सभ्य समाज के आडम्बर और अस्वाभाविकता से मुक्त है। वह किसी एकांत घाटी या किसी छोटे नीरस से गाँव में अपना सारा जीवन बिता देता है। जीविका की खोज में वह किस दूसरी वस्तु को अपनी बन्दूक का निशाना बनाए, इसी चिन्ता में उसका अधिकांश समय निकल जाता है और सभ्य समाज के शिष्टाचार सीखने को उसके पास वक्त नहीं रहता।

आइए, आपको दिर की घाटी में ले चलें। वह देखिए, मँझोले क़द और सुकुमार किन्तु बलिष्ठ शरीर का युवक हमारी ओर चला आ रहा है। उसके बाल लम्बे हैं और उनमें तेल चुपड़कर उसने ढंग से कंघी कर रखी है। एक लाल रेशमी रूमाल सीज़र महान् (Caesar) के ताज की भाँति तिकोनाकार उसके सिर पर बँधा है। उसके बालों में

फूल और आँखों में सुरमे की लकीर है । अपने ओठों को उसने अख़रोट के छिल्के से रँग लिया है। उसके हाथ में सितार और कन्धे पर बन्दूक है। उसकी चाल-ढाल और आकृति को देख आप उसे ज़नाना समझेंगे, किन्तु ज़रा उसकी आँखों में आँखें तो डालिए! उनमें आपको पुरुषोचित् साहस, निर्भीकता और स्फूर्ति दिखाई देगी। उनमें किसी प्रकार का भय नहीं, और सम्भवतः मृत्यु की वास्तविकता को जानने के लिए वे बहुत देर तक खुली नहीं रहेंगी। इन सुरमा भरी आँखों और इन रँगे लाल ओठों का मूल्य वह अपने प्राण देकर चुकाता है। दिर की घाटी के बलिष्ठतम् क़बीले के पठानों का यह बेटा युद्ध के समय कभी छिपकर अपनी प्राण रक्षा नहीं करता, और जब भयभीत होता है तो सदैव हँसता और गाता है। वह जितना सुन्दर है, उतनी ही वीरता से लड़ते हुए वह जान दे देगा, क्योंकि वह प्रेम करने, क़हक़हे लगाने, गाने और लड़ते-लडते मर जाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता। उसे, इसके अतिरिक्त, और कुछ सिखाया भी नहीं जाता है। सुनिए वह गा रहा है—

सुन्दर फूल
तेरे केशों में गुँथे हुए हैं
और तेरी आँखे, ओ प्रेयासि
नरगिस के फूलों की भाँति मस्त हैं।
ओ मेरी अमूल्य निधि!
मेरी जान, मेरी प्राण!
ओ मेरे नन्हें–से पहाड़ी कोकनार
तू मेरे लिए प्रातः का चमकता नक्षत्र है।
तू, कि जो ढलान पर का सुन्दर फूल है
तू, कि जो पहाड़ की चोटी की उज्ज्वल श्वेत हिम है
तेरी हँसी जल–प्रपात है, प्राण!
और तेरी सरगोशी सान्ध्य–समीर!
ओ मेरी सेब के फूलों से लदी डाली,
ओ मेरी नन्हीं-सी तितली,
आ और मेरे मन–मन्दिर में अपना नीड़ बना!

और नीचे घाटी में कलकल बहती नदी के किनारे खेतों में से उसकी प्रियतमा का सुरीला स्वर सुनाई देता है। उसके उत्तर में मानो वह अपने पिता के खेतों में वृक्षों को सुनाकर कहती है—

ओ मेरे प्रियतम्
इल्लम की चोटी पर मेरे लिए एक झोपड़ा बना दे
स्वर्ण–तीतरी की भाँति
नाचती हुई मैं वहाँ आऊँगी।

और इस प्रकार यह प्रेम-कथा का प्रारंभ होता है। तब युवक अपने किसी मित्र से लड़की के माता–पिता से प्रार्थना करने को कहता है। यदि दोनों पक्ष मान जाते हैं, और सब कुछ ठीक हो जाता है (जो शायद ही कभी होता है) तो लड़के की माँ इस स्वर्ण-तीतरी को लाने के लिए एक तिथि निश्चित करती है। तब वर-पक्ष की लड़कियाँ अपने सर्वोत्तम् वस्त्र धारण करके जाती हैं, और वधु के सम्मान में अपने आप को अलंकृत करने में कुछ और उदारता से काम लेती हैं। तब गोरे-गोरे मेंहदी लगे हाथ झांझन बजाते हैं, हँसी क़हक़हे शांत हो जाते हैं और वातावरण में मधुर संगीत गूँज उठता है :

दूल्हा तो लम्बा सनोवर की भाँति रे
दुल्हन गुलाब की झाड़ी
उसके सिर पर सुनहली दुशाला
उसकी ठोढ़ी पै सुन्दर तिल रे,
उसके कपड़े हैं फटे पुराने जी
उजड़ी बस्ती में फूलों के बाग़
दूल्हा तो लम्बा सनोवर की भाँति रे
दुल्हन गुलाब की झाड़ी।

तब उनका विवाह हो जाता है और दोनों प्रसन्नता पूर्वक साथ-साथ रहने लगते हैं; क्योंकि वे जानते हैं कि वे बहुत देर इकट्ठे न रह सकेंगे।

एक दिन वह घर से बाहर जाता है और फिर कभी लौटकर नहीं आता। वह हँसता-हँसता गोली का शिकार हो जाता है जो उसकी अपनी ही जाति और अपने ही वंश के किसी युवक ने चलाई थी।

उसकी पत्नी उससे कुछ सुखद क्षणों की स्मृति, दो बच्चे और जीवन भर के दु:ख का उत्तराधिकार पाती है। उसकी बन्दूक और सितार वह अपने बच्चों के लिय खूँटी पर टाँग देती है। जब किसी संध्या को वह दूर से किसी का अनुरागभरा संगीत सुनती है तो अपने आँसुओं को छिपाना सीख जाती है। वह अपने बड़े लड़के की पूजा करती है; क्योंकि उसका चेहरा-मोहरा और स्वभाव अपने पिता का है और अपने छोटे लड़के को प्यार करती है; क्योंकि उसने पिता की मुस्कान पाई है। जब वह संध्या के समय आग के सामने बैठती है और अपने लड़कों की ओर देखती है तो उसकी दृष्टि आप से आप बराबर के रिक्त स्थान पर जम जाती है और उसे अपने दिवंगत पति की याद हो आती है। कभी ऐसे समय लड़के पूछ बैठते हैं, "माँ, हमारा पिता कैसा था?"। वह कैसे कहे कि वह बड़ा डॉक्टर या दार्शनिक या मुल्ला या विद्वान था? वह कहती है, "तुम्हारा पिता बड़ा आदमी था, निपुण योद्धा था," और वह उन्हें वह गीत सुनाती है जो मलीज़इयों और अलीज़इयों की लड़ाई के सम्बन्ध में है—जिसमें मलीज़इयों की विजय हुई थी और जिसमें उनका पिता तीन सहोदरों और पाँच चचेरे-ममेरे भाइयों के साथ वीर-गति को प्राप्त हुआ था :

वह अत्यन्त अशुभ, बेरौनक और सर्द दिन था
वसंत ऋतु का अन्तिम दिन
जब हाकिम खाँ और उसके वीर सैनिक
अलीज़ई शाह के क़िले पर चढ़ दौड़े थे

एक हरकारा आया
क़बीले के गाँव-गाँव
घर-घर
भागता हुआ गया और जहाँ गया
मलीज़ई वीरों को
युद्ध और मृत्यु और गौरव का सन्देश देता गया।

और पुरुषों ने अपनी बन्दूकें सम्हालीं
पत्नियों की प्रार्थनाएँ

औ' माँओं के क्रन्दन
हवाओं में गूँजे
पुरुषों ने अपने बच्चों को देखा
खेलते खाते
लिए दाँत तब पीस अपने उन्होंने
औ' खाईं भयानक सौगन्धें !

और भाई ने भाई की आँखों में देखा
और देखा कि उनमें भी दुख है वही,
पत्नियाँ रोईं
माएँ चिल्लाईं
किन्तु पुरुष तो—
घोड़ों पै होकर सवार
हवा हो गए।

नन्हें नन्हें बालक
नन्हें नन्हें दिलों से कर
नन्हें नन्हें
क्रन्दन
पूछते थे—अब्बा, चचा और ताऊ कहाँ हैं ?
और माताओं को और भी वे रुलाते थे
बच्चों को कोई कैसे बताए, समझाए !
मलीज़ई बहादुर
हज़ारा की घाटी से गुज़रे
नारोके की चोटी को छूते गए
औ' गाए उन्होंने गाने हवा में
कल की लड़ाई के
मौत औ' हँसी के
कि मौत हो जैसे मज़ाक !

औ ' शाहे–अलीज़ई
झुका और उसने झुककर के चूमा
इकलौते लड़के
इकलौते अपने
बच्चे का मुख—
कि नाम उसको अपना
अपने क़बीले का
प्यारा था;–
जिसको कि उसने
अपनी दिलेरी से ज्योतित रखा था।
वह शाहे-अलीज़ई
कि जो था बहादुर
निडर,
और उद्दाम
उद्दंड !
बोला–झुका दूँगा सिर बाग़ियों का
कुचल दूँगा अभिमान बलशालियों का
कि अभिमान औ ' बल में उनसे बड़ा हूँ।
मैं शैतां के बहकाए इन मूर्खों को
कि पूंजी है
चतुराई,
बारूद
जिनकी
कुचल दूँगा पैरों के नीचे क्षणों में।

मलीज़ई क़बीले के बाँके लड़ाके
कि हँसते थे जो मौत पर और शाह पर
उड़ाते थे घोड़े औ ' गाते थे गाने
जहन्नुम के

जन्नत के औ' उसकी हूरों के,
बहारों के फूलों के औ' तितलियों के
औ' कहते थे—अल्लाह
उसे प्यार करता है, ख़ुश उस पै होता है
जो हँसते गाते
मधुर मौत की गोद में जा पहुँचता।
औ' कहते थे—कायर
रोते हैं औ' रात-दिन भार ढोते हैं
लेकिन लड़ाके
जन्नत में जाते हैं सीधे!

और हाकिम खाँ
सवार अपने घोड़ों पै
बोला—ओ बीते हुए सूरमाओं के बेटो
अरे सूरमाओ!
परखने का, तुलने का पुरुषत्व के अब
समय आ गया है।
वह दिन आ गया है
बता दो ज़माने को—
तुम हो जने अग्नि के,
सत्य के! आज
दिन आ गया है
कि तुम रक्त दे दो!
कि तुम स्वप्न दे दो!
कि दे दो तुम अपना जीवन, जवानी!
ओ गाओ दिलेरो
बजाओ दिलेरो
कि तारों की झंकार में भर दुआएँ दिलेरो!

औ' तब हाकिम खाँ--
जो जीता रहा और गाता रहा
और करता रहा प्रेम
औ' हँसते हँसते मरा औ' कहाया
वीरों का राजा।
बढ़ा ले जवानों को अपने भयंकर
औ' रक्त औ' गरज और चीत्कार में
किया दुर्ग सर जिसने शाहे ज़ई का
कलम सिर किया जिसने शाहे ज़ई का
जला डाला क़सबे को शाहे जई के
आर जिसने उसकी
चौदह हसीं रानियों से
शोभा बढ़ाई
अपने हरम की
उठीं सात सौ अर्थियाँ तब
कि जिनमें से हर में
था वीर, था मित्र
औ' सात सौ बाल दौड़े
उसे देखने को, उसे प्यार करने को औ' छोड़ने को
सिखाया था जिसने उन्हें हँसना गाना
औ' हँसते गाते
गले मौत को निज लगाना।

पठान अत्यन्त कोमल-हृदय व्यक्ति है किन्तु बादाम की भाँति वह सदैव अपने हृदय की इस कोमलता को बाह्य कठोरता, रुक्षता और कर्कशता में छिपाए रखता है। वह एक सफल योद्धा है और अपने दुर्बल अंग को छिपाना नहीं भूलता। उसका कहना है—

हलवा न बन, जो चट कर जाएँ भूखे,
कड़वा न बन कि जो चक्खे सो थूके।

और वह अपनी स्वाभाविक मधुरता को अपनी कृत्रिम कर्कशता में छिपाए रखता है। उसका यह प्रयत्न आत्म-रक्षा की चेष्टा के अतिरिक्त और कुछ नहीं। जहाँ तक सफल जीवन का सम्बन्ध है, उसका बलिष्ट शरीर, उग्र स्वभाव और कोमल हृदय अच्छा सम्मिश्रण नहीं, किन्तु यह सम्मिलन रस, रंग और काव्य के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। वह अपना मुख कठोर बनाए रखता है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि आप उसकी आँखों की कोमलता को जान सकें। वह बदमाश कहलाना स्वीकार करेगा, किन्तु वह अपनी पत्नी के लिए रोकर आँखें भी सुजा सकता है, यह किसी को बताना उसे स्वीकार न होगा।

उसके माता-पिता आरम्भ ही में उसे अपने जीवन के कष्टों के अभ्यस्त बना देने की चेष्टा करते हैं। "कपोत के नेत्र अवश्य सुन्दर हैं," वे उसे समझाते हैं, "किन्तु वायु-मंडल में तो उकाब का राज्य है, इसलिए अपनी कपोत जैसी सुन्दर आँखें छिपा लो और उकाब जैसे नख पैदा करो," और वह कपोत जैसी सुन्दर आँखें रखने के बावजूद उकाब बन जाता है; किन्तु कभी-कभी नीरव संध्या में जीवन और उसके कठोर संघर्ष को वह भूल जाता है और कपोत की भाँति कूकने लगता है—

हाय मानव के रूप में सुन्दर फूल !
हाय वे मद्धिम ज्योति से झिलमिलाती आँखें,
और वे ओंठ जो मदमत्त बना दें
हाय वे ओंठ जो पागल बना दें

ओ ख़ुदा, तूने सुन्दरता दी--
अपने अस्तित्व और ज्योति का संगीत—
और लाल और श्वेत फूलें का बाग़
मेरी प्रेयसि को दिया क़हक़हे के बदले
तू ने प्रेम को सागर की शक्ति प्रदान की
और उसे सम्राट् का दिल बख्श दिया !
किन्तु तूने संगीत को स्वर क्यों दिया ?
रंग क्यों दिया ? और क्यों दी

वह हल्की-सी कोमलता जो
प्रार्थना-सी शान्ति देती है !

मुझे तूने दुख और आकाँक्षाएँ दीं,
और मेरे हृदय को दर्द, आश्चर्य्य और उल्लास
और मेरी प्रेयसि को दीं सपनों में डूबी-सी आँखें—
सौन्दर्य्य और पुलक से भरी-सी आँखें—
कि जिनमें कभी चाँदनी है छलकती
कभी दौड़ जाते हैं शामों के साये
कभी चाह से, प्रेम से, जो हैं भरपूर
लबालब कभी जिनमें आशाएँ, सपने
कभी, जो दयालु कभी जो हैं मग़रूर

ओ अल्लाह, नरक, औ ' दया-दंड वाले
ओ घुंघराले लम्बे-से केशों के अल्लाह
ओ मालिक मनोहर से गीतों के औ ' मोतियों के
ओ अल्लाह मुहब्बत के, हुस्नोजवानी के, दीवानगी के
ओ नरगिस गुलाब और फूलों के कर्ता
बनाया बता तूने क्यों हुस्न से है
नगर गर्द का यह ?
औ ' बख़्शा है क्यों तूने
प्रेयसि को मेरी
अपने अस्तित्व का गीत,
अस्तित्व का नूर !

बेचारा पठान अपने हृदय के प्रकाश की आवाज़ में मुल्ला की बातों को नहीं समझ पाता ।

मैंने आपके सम्मुख पठान लोक-गीतों का भावार्थ रखने की चेष्टा की है, किन्तु उनकी लय, तान और प्रवाह मैं आपको नहीं बता सका,

हालांकि लय और ताल लोक-गीतों की सबसे महत्वपूर्ण चीज़ हैं। किसी लोक-गीत की सुन्दरता को मात्र पढ़ने से नहीं जाना जा सकता; इसके लिए उसे किसी को गाते हुए सुनना आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार, जैसे केवल मख़मल के वर्णन से उसकी कोमलता की कल्पना नहीं की जा सकती। उसे जानने के लिये मख़मल को छूकर देखना, उसे अपने गाल से रगड़कर महसूस करना जरूरी है। इसलिए यदि वास्तव में आप पठान के लोक-गीत को सुनना और समझना चाहते हैं तो संध्या की बेला में, उसके देश में बहनेवाली किसी नदी के किनारे जाइए, जब पठान तरुणियाँ वहाँ पानी भरने आती हैं और पठान युवक आशाओं और उमंगों की मदिरा का अपना नित्य का घूँट प्राप्त करने को वहाँ मँडलाता है, क्योंकि वह इसी मदिरा पर जीता है, दूसरी कोई मदिरा नहीं पीता।

मैंने आपसे लोक-गीत सुनाने का वादा किया था और उसके स्थान पर प्रेम की एक ऐसी साधारण-सी कहानी सुना दी है जिसकी तान विवाह, शादी और बच्चों पर जा टूटती है। मुझे खेद है। किन्तु पठान विवाह के बिना प्रेम की कल्पना नहीं कर सकता और यदि वह कभी ऐसा करने की चेष्टा करता है तो अपने इस साहस का मूल्य उसे अपने प्राणों से चुकाना पड़ता है। यही कारण है कि उसकी समस्त रूमानी कविता ऐसे साहसी वीरों के सम्बन्ध में है, जिन्होंने शादी के बिना प्रेम करने की कोशिश की।

संसार भर में समाज प्रथा तोड़नेवाले को अपराधी बताता है और इस अपराध का भारी दंड देता है, पर साथ ही प्रथा तोड़ने के लिए उसकी प्रशंसा भी करता है।

मनुष्य का स्वभाव है कि वह मन्दिर का बड़ा भारी पुजारी बनता है, किन्तु मूर्ति तोड़नेवाले की पूजा करता है।

पठान अपनी बेटी से प्रेम करनेवाले को अपनी गोली का निशाना बना देगा, किन्तु गीत वह उसी प्रेम के गाएगा! उसकी यह भाव-वृत्ति आपको अद्भुत लगेगी, किन्तु आप यह मानेंगे कि उसकी यह आदत साधारण लोगों के इस स्वभाव से भिन्न नहीं जो चोर को तो फाँसी पर चढ़ा देगा और सौदागर की प्रशंसा करेगा। मनुष्य मसीह को सूली पर चढ़ाने और

पाइलेट (Pilate) को निमन्त्रित करने का पुराना अभ्यस्त है, किन्तु जब वह गाता है तो मसीह ही के गीत गाता है, पाइलेट के नहीं। क़ानून के विषय में संसार भर में कोई गीत नहीं और कभी किसी कवि ने अपनी कविता अपने दस बच्चों की माँ को समर्पित नहीं की।

पठान में और आप में कोई अन्तर नहीं। वह भी आप ही की भाँति अनुभव करता है; क्योंकि वह इतना धनी नहीं कि मूर्ति-तोड़क को जेल में पहुँचाने के लिए क़ानून की सहायता ले, इसलिए वह एक कारतूस इस 'शुभकाम' में ख़र्च कर देता है। अनुभूति दोनों दशाओं में एक-सी है। केवल पठान के व्यक्तिकरण का ढंग कुछ कठोर है, किन्तु वह इसलिए कि वह स्वयं कठोर भी है और निर्धन भी। वह पाइलेट को मदिरा नहीं पिला सकता, पर तरबूज़ की एक फाँक उसकी दावत में रख देता है और बस! किन्तु जब वह गाता है तो उसके गीत उसी प्रथा-तोड़नेवाले के विषय में होते हैं और उसकी आँखें हम-आप ही की भाँति प्रेम की अनुभूति से स्वप्निल और कोमल हो जाती हैं, क्योंकि प्रेम और स्वप्न वैसे ही अनन्त और सार्वभौमिक हैं, जैसे चेचक और परियाँ!

परियों की कहानी

प्राचीन काल में एक अतीव सुन्दर राजकुमार था जो अपने पुरखों की भाँति ख़ाल्दून के कई क़बीलों पर राज्य करता था। उसने एक ऐसी लावण्य-मयी राजकुमारी से विवाह किया, जिसकी सुन्दरता और सुषमा अलौकिक थी। वह गुलाब-कली की सुगंध-सी कोमल और मृदुल थी। उसका शरीर सुकुमार था और ओंठ छोटे-छोटे थे। उसकी अंगुलियाँ पतली, लम्बी, मंजुल, सुकुमार और असहाय-सी थीं और उसका स्वर अतिशय मधुर, स्निग्ध, शान्ति-प्रद और संतापहर था, किन्तु जिस वस्तु ने उसे संसार की सर्वोत्तम सुंदरी बनाया था, वह थे उसके नेत्र—दीर्घ, विशाल, दीप्तिमय नेत्र ! उसकी आत्मा और कल्पना के बदलते हुए मनोभावों के समस्त रंग उसकी आँखों में सदैव अतीव सुंदरता और सरलता से नृत्य करते थे। कभी वह अरुण, कभी बैंजनी और कभी सुनहरे हो जाते थे और उन्हें देखते हुए राजकुमार को कहीं दूर से उठनेवाले उन्मन, मधुर संगीत की अनुभूति मिलती। कभी उनमें चाँद-सी ज्योति जगमगा उठती और राजकुमार अनुभव करता जैसे कहीं से उसके अपने हृदय में आशा और प्रेम का उज्ज्वल प्रकाश उमड़ आया है और वहाँ से समस्त संसार में व्याप्त हो रहा है।

किन्तु भगवान् की इच्छा क्या हुई कि एक सुबह जब राजकुमार ने उठकर अपनी रानी की आँखों में आँखें डालीं तो उसे वह समस्त ज्योति म्लान होती हुई दिखाई दी। ज्यों-ज्यों दिन बीतते गए वे जगमगाती आँखें दिन-प्रति-दिन निष्प्रभ होती गईं। दरबार के वैद्यों–हकीमों ने बहुतेरा औषध–उपचार किया, किन्तु कुछ लाभ न हुआ। ख़ाल्दून के समस्त क़बीलों पर गहरी उदासी छा गई।

राजकुमार ने अपने राज्य के अनुभवी और बुद्धिमान् मंत्रियों को बुलाया और उनका परामर्श लिया।

"ऐ मेरे स्वर्गिक राजकुमार," उमर कवि ने कहा, "समस्त प्रकाश के लिए यह अनिवार्य है कि वह हमारी दृष्टि के क्षेत्र से दूर चला जाए। वास्तव में वह कहीं जाता नहीं, वरन् उसी ज्योति में समा जाता है, जहाँ से वह उदित हुआ था, ठीक उसी प्रकार, जैसे संगीत की लय निस्तब्धता से जन्म लेने के बाद लहराती हुई फिर निस्तब्धता ही में लीन हो जाती है। उसका वह प्रवाह उसकी आकृति है और नीरवता में व्याप्त होना उसका जीवन ! इसलिए निराश और निरुत्साह न हो, ऐ मेरे शाहज़ादे, वरन् कृतज्ञ हो कि तुझे संगीत की वह लय सुनने को मिली जिसकी मधुरता स्वर्गिक थी, कि तुझे ऐसी चिंगारी की पूजा का स्वर्ण-अवसर मिला, जिसका आलोक चाँद और सूर्य को भी प्रतिहत करता था। और अब अपने स्वप्नों का रंग और अपने मन का प्रकाश लेकर राजकुमारी की आँखों में उँडेल और अपनी स्मृति को आदेश दे कि उस संगीत की सृष्टि करे, जो उन आँखों से जगमगाया करता था

"बन्द करो इस बकवास को," बुद्धिमान् ख़लील ने कहा, "ढकोसले और आत्म-प्रवंचना ! ऐ मेरे स्वर्गिक राजकुमार, दूरदर्शी और क्रियाशील बन। संसार में जगमगाती आँखोंवाली लड़कियों का अभाव नहीं। मैं शमीम की घाटी से ऐसी सुन्दरी तेरे लिए लाऊँगा जो ग्रीष्मकाल की रात्रि में तेरे महल को जुगनुओं का उपवन बना दे।"

किन्तु तभी राजकुमार की आँखों में क्रोध से चिंगारियाँ फूट उठीं। उसने वृद्ध ख़लील की दाढ़ी पकड़ ली और उसे लगभग नोच डाला (क्योंकि खलील की दाढ़ी उसकी बुद्धि जितनी परिपक्व न थी।) और फिर कुछ सँभलकर राजकुमार ने ख़लील को महल से बाहर निकल जाने की आज्ञा दी। ख़लील उदास-चित्त महल से निकला, तब उसे अपने बुद्धिमान् पिता का उपदेश याद आया, "मेरे बेटे, किसी प्रेमी को शिक्षा देनेवाले से बड़ा मूर्ख कोई नहीं," उसने ख़लील को समझाया था। खलील को अनुभव हुआ कि इस प्रकार मूर्ख बनकर वह पहले से अधिक अनुभवी और बुद्धिमान्

हो गया है और इस बात पर उसे प्रसन्नता हुई। उसकी उदासी दूर हो गई। वह मुस्कराया और घर जाकर सो गया। शीघ्र ही उसके बुद्धिमान् खर्राटे वातावरण में गूँजने लगे और वह निरर्थक और मूर्खतापूर्ण स्वप्न देखने लगा।

इधर महल में गहन नीरवता छा गई। आखिर भविष्य-वक्ता रहमान ने इस नीरवता को तोड़ा, "मेरे प्यारे शाहज़ादे," उसने अपने गहन गंभीर स्वर में कहना आरम्भ किया, "मेरी बात को ध्यान से सुन, क्योंकि यह मैं नहीं जो बोल रहा हूँ। खाल्दून के पूर्व नदी पार एक व्यक्ति रहता है, जिसे संसार फ़क़ीर कहता है, किन्तु उसके हृदय में एक अलभ्य, अमूल्य वस्तु का झरना है, जिसके एक चुल्लू से संसार के किसी भी रोग को आराम आ जाता है, क्योंकि उसने जीवन-मृत्यु पर विजय-लाभ किया है। जा और उस फ़कीर को ढूंढ़ और उससे मायामय द्रव का चुल्लू माँग और उसका एक-एक बूंद राजकुमारी की दोनों आँखों में डाल। वे पहले से अधिक सुन्दर, पहले से अधिक शान्त और पहले से अधिक स्वप्निल हो जाएँगीं!"

आशा और आनन्द से राजकुमार मुस्कराया और दरबार के समस्त बुद्धिमानों ने सुख की सास ली और एक दूसरे से सरगोशियों में कहा, "कि रहमान वास्तव में एक निपुण भविष्य-वक्ता है" और अज्ञातभाव से अपनी डाढ़ियों पर हाथ फेरे।

और भगवान् की कृपा से राजकुमार ने अपन समस्त नागरिकों, शिकारियों, कुत्तों, बुद्धिमान् हकीमों को साथ लिया और निरंतर खोज के पश्चात् उस फ़क़ीर को ढूँढ़ निकाला।

"तुम्हारे हृदय में क्या है?" शाहज़ोद ने पूछा।

"प्रेम और क़हक़हे," फ़कीर बोला।

"क्या इनके दो बिन्दु मुझे अपनी रानी के लिए दोगे?" राजकुमार ने पूछा।

"अवश्य," फ़कीर ने क़हक़हा लगाया, पर तुम्हें उनका मूल्य देना होगा।

"मूल्य! बता ऐ फ़कीर, तू उनके बदले में क्या चाहता है?"

"एक कण क़हक़हे के बदले में तेरा सिंहासन और एक कण प्यार के बदले में तेरा अहंकार," फ़क़ीर ने क़हक़हा लगाते हुए कहा।

"हूँ," राजकुमार की भृकुटी चढ़ गई। "मेरा सिंहासन!" किन्तु अभागे फ़क़ीर, तू नहीं जानता कि यह राजपाट मुझे अल्लाह ने दिया है और साथ ही उसकी रक्षा के हेतु उसने मुझे शक्ति भी प्रदान की है; क्योंकि तूने अपने राजकुमार से ऐसा निष्ठुर बर्ताव किया है और अपनी सम्राज्ञी से तूने इतनी कृपणता का व्यवहार किया है, इसलिए मैं तुझे इस योग्य नहीं समझता कि तू ऐसी अमूल्य निधि अपने हृदय में गुप्त रखे। इसलिए मैं राज्य के नियम और प्रजा की शान्ति के नाम पर इस समस्त निधि को ज़ब्त करता हूँ।"

यह कहकर उसने भिखारी को बाँधने की आज्ञा दी। और उसे हथकड़ियों और बेड़ियों में जकड़ महल में ले आया और एक अँधेरे भूगृह में डाल दिया।

दूसरे दिन जब उस अंधकार-भरे कारागृह के किवाड़ खोले गए तो शाहज़ादा क्या देखता है कि वहाँ भिखारी के स्थान केवल कुछ चीथड़ों और हड्डियों का ढाँचा पड़ा है। दीवार पर उसके नाम एक संदेश लिखा था—

"ऐ मेरे महान् शाहज़ादे! तेरे राज-नियम के अधीन जो वस्तु है, उसे मैं पीछे छोड़ जा रहा हूँ, ताकि तेरा विधान उसे उचित दंड दे।"

जब राजकुमार ने यह देखा तो उसके क्रोध की सीमा न रही, क्योंकि इससे पहले उसे कभी पराजय न हुई थी। वह अपने समस्त विज्ञ मंत्रियों पर बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने उनकी डाढ़ियाँ नोच डालीं। वह राजकुमारी पर भी बहुत रुष्ट हुआ, क्योंकि उसी के कारण उसे यह पराजय स्वीकार करनी पड़ी। वह क्रोध से बोला—"वज्र गिरे उन आँखों पर," और उसने बुद्धिमान् ख़लील को बुलाया और घोड़े, संगीतज्ञ, बाज़ और शिकारी कुत्ते और अपने बुद्धिमान् मंत्रियों की सेना के साथ शमीम की घाटी की सुन्दरी लाने को चल पड़ा। शमीम की घाटी की सुखमय विजयों में वह अपनी एक मात्र पराजय शीघ्र ही भूल गया।

किन्तु बेचारी राजकुमारी! वह लगभग अंधी हो गई है।

एक घटना

शिशिर की संध्याएँ पेशावर की घाटी में लम्बी अँधेरी, उदास, सरगोशियों भरी और वहाँ के निवासियों को एक दूसरे के सन्निकट कर देने-वाली होती हैं। ऐसी शीत संध्याओं में जी चाहता है कि लकड़ी के कुंदों को इकट्ठाकर आग जलाएँ और उसके पास बैठें, ज्वालाओं को नाचते हुए देखें और उसकी सुखद स्निग्धता में जीवन की कटु वास्तविकता को मधुर-मदिर सपनों में खो जाने दें।

शीत काल की एक ऐसी ही उदास संध्या थी और मैं स्वभावानुसार जलती चटखती हुई लकड़ियों के समीप बैठा था। तभी मैंने बाहर अपने अभिन्न-हृदय मित्र मुरतज़ा की पगध्वनि सुनी।

"कहाँ हो दोस्त?" वह पचास क़दम परे ही से चिल्लाया।

"चले आओ, चले आओ," मैंने उत्तर दिया और उठकर दरवाज़ा खोला।

उसके दोनों संरक्षकों ने मुझे सलाम किया और मेरे संरक्षकों के साथ बैठने को चले गए और मुरतज़ा ने भीतर प्रवेश किया—पतला छरहरा शरीर, सामान्य-मध्य से कुछ निकलता हुआ क़द, विशाल मस्तक, चिबुक पर छोटा-सा गढ़ा और मोटा सिर—इसके अतिरिक्त एक ही दृष्टि में एक साधारण दर्शक को जो बात उसमें प्रकट दिखाई देती थी वह था उसका पतला-सा किन्तु दृढ़ संकल्प का द्योतक मुख! और फिर उसकी व चतुर, संशयशील, अविश्वासपूर्ण आँखें, और कंधे से लटकता हुआ रिवाल्वर! उस-के कपड़े मैले थे और हाथ खुरदरे बेडाल और कुरूप! आप सम्भवत: कल्पना में भी उसे अपने कमरे में घुसने की आज्ञा न दें, किन्तु मैंने कमरे

ही के नहीं, अपने मन के किवाड़ भी उसके लिए खोल दिए, क्योंकि वह मेरा मित्र था, उसका पिता मेरे पिता का मित्र था और उसका दादा मेरे दादा का मित्र !

वह एक आत्माभिमानी ख़ाँ का सबसे बड़ा बेटा था और इस आत्माभिमान की रक्षा के हेतु उसे तरुणावस्था ही में एक दूसरे ख़ाँ को अपनी गोली का निशाना बना देना पड़ा था, जिसने उसके वृद्ध पिता का अपमान किया था। पन्द्रह वर्ष की आयु ही में वह मफ़रूर डाकू (Outlaw) करार दिया गया, तीस वर्ष की आयु में पकड़ा गया और चौदह वर्ष तक उसने भारतीय कारावास का 'आनन्द' लिया ! वहाँ से छुट्टी मिलने पर वह राजनैतिक आन्दोलन में सम्मिलित हो गया और फिर कारावास में जा अतिथि बना। वहाँ पर जेलरों को परेशान करने के लिए वह यथेष्ट प्रसिद्ध हो गया। वह इतना 'दुर्बल' था कि उसे कोड़े न लगाए जा सकते थे, इतना 'वृद्ध' था कि कठोर परिश्रम के अयोग्य था। अत: जो उसके जी में आता, करता। जेलरों और उनके सहकारियों के लिए उसका अस्तित्व खा़सी परेशानी का कारण था।

वह भीतर आया और आग के पास बैठ गया।

"कमान्डर," मैंने पूछा, "कैसा चल रहा है जीवन ?"

हम सदैव उसे 'कमान्डर' के नाम से पुकारते थे, क्योंकि १९३० के राजनैतिक आन्दोलन में वह खुदाई ख़िदमतगारों का कमान्डर था।

वह बहुत देर तक लपलप करती ज्वालाओं में देखता रहा, फिर बोला—"जीवन से भिज्ञ होने के लिए मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ।"

मैंने उसकी उन्हीं चतुर आँखों में देखा। वे अतिशय सरल और स्वप्निल थीं। मेरी उपस्थिति में उन आँखों का संदेह दूर हो गया था और मेरे लिए उनमें स्नेह था। मेरी सभी शंकाएँ दूर हो गईं और मैंने साहस करके वह प्रश्न पूछा जो मैं सदैव उससे पूछना चाहता था—

"मुरतज़ा," मैंने कहा, "किस बात ने तुम्हें अपने घनिष्ठतम् मित्र अत्ता की हत्या करने को विवश किया ? मैं यह कभी नहीं समझ पाया !"

कुछ देर के लिए वह बड़ी तीक्ष्ण दृष्टि से मुझे देखता रहा, किन्तु जब उसका संदेह दूर हो गया तो फिर वह ज्वालाओं में दृष्टि गड़ाए बोला,"इसका कारण मेरा चचा था, जिससे मैं तब भी घृणा करता था और अब भी करता हूँ। तुम्हें ज्ञात है कि चौदह वर्ष तक म विद्रोही बना रहूँ। मेरे साथ साहसी नवयुवकों का एक सुगठित दल था जो सड़कों और ग्रामों में लोगों को निर्भीकता से लूटता था और लूट का धन-माल मेरे पास ले आता था, क्योंकि वह न कभी दल को भूखों मरने देता था और न उसके पास गोली। बारूद का अभाव होने देता था। दल के युवकों को मुझ पर पूर्ण विश्वास था। वफ़ादारों की इसी टोली के कारण मेरा चचा सदैव मेरा आदर करता था। मुझे दावतें देता, आवश्यकता पड़ने पर मुझे सहायता पहुँचाता और मैं उसके शक्तिशाली शत्रुओं और प्रतिद्वंद्वियों को भयभीत रखता। मेरे कारण अंग्रेज़ शासकों की दृष्टि में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ गई थी और दूसरे खाँ उसका आदर करते थे (किन्तु वास्तव में इस बात का पता मुझे बहुत देर में चला ।) मैं तो समझता था कि वह केवल मेरे कारण ही मुझ से स्नेह करता है, क्योंकि उसका मेरा निकटतम् सम्बन्ध था। मैं उसका भतीजा था और मेरी नसों में वही रक्त था जो उसकी नसों में, और मैं उसके स्नेह और उदारता का उत्तर सच्चे अनुराग, आदर और श्रद्धा से देता था।

एक संध्या उसने मुझे बुला भेजा। मैं अपने उस गोपन–स्थल की हिम–सी ठंडक और उदास एकाकीपन से अपनी दादा के स्निग्ध स्नहासिक्त घर में गया। मेरा चचा आया, उसने मुझे एक लम्बी कहानी सुनाई कि किस प्रकार अत्ता ने उसके शत्रुओं के साथ मिलकर उसे मारने का षड्यंत्र किया है। उसने मेरे पाँव पकड़ लिए और फूट–फूट कर रो पड़ा। उसने गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की कि मैं उसके प्राणों और कुल की रक्षा करूं। मुझे उसका स्त्रियों की भाँति रोना और गिड़गिड़ाना अत्यंत घृणास्पद लगा और मैंने इन्कार कर दिया। मेरी चाची इस विनय में उसके साथ सम्मिलित हो गई। वह न रोई, न गिड़गिड़ाई, किन्तु उसने आर्त–दृष्टि से मुझे देखा और बोली–"क्या तुम इस बात को सहन कर लोगे की तुम्हारे जीते जी तुम्हारे पिता का भाई मार दिया जाए? वह वृद्ध है, उसके बाल श्वेत हो गए

हैं, तुम तरुण और युवा हो। क्या तुम्हें उस वंश की प्रतिष्ठा का तनिक भी ध्यान नहीं, जिसने तुम्हें इस ससार में जन्म दिया, अपना नाम और प्रतिष्ठा दी ? तेरा पिता अब्दुल्ला कभी ऐसे अवसर पर न झिझकता था। वह जन्म ही से ख़ान उत्पन्न हुआ था, वह ख़ान ही की भाँति जिया और ख़ान ही की भाँति मरा।

इस अन्तिम बात ने मेरी 'न' को 'हाँ' में बदल दिया। "बहुत अच्छा," मैंने कहा, "अत्ता को इस षड्यंत्र का फल मिलेगा।"

अत्ता एक प्रसिद्ध विद्रोही डाकू (outlaw) था–अत्यन्त निर्भीक, सिद्धान्त–हीन, निर्दय और साहसी! सरकार और जनता दोनों के क़ानून उसने पावों तले रौंद डाले थे। वह न सरकार के हाथ आया था, न किसी पठान के। वह सुन्दर हृष्ट–पुष्ट युवक था, किन्तु उसकी सुन्दरता और असाधारण साहस के बावजूद मेरे हृदय में उसके प्रति घृणा थी, क्योंकि उसने मेरे एक सहपाठी के बूढ़े, दयालु पिता की हत्या की थी–उस समय मैं बहुत छोटा था और मुझे यह ज्ञात न था कि मेरे मित्र के इस दयालु वृद्ध पिता के सिर किसी दूसरे वंश की हत्या का ऋण है, जो उसने अपने यौवन में उस वंश के एक व्यक्ति को अपनी गोली का निशाना बनाकर अपने सिर लिया था। उसने अपनी यौवनावस्था में जो बोया था, अत्ता ने उसे वृद्धा-वस्था में वही काटने पर विवश किया, क्योंकि किसी पठान की हत्या का बदला हत्या के अतिरिक्त किसी दूसरी चीज़ से नहीं चुकाया जा सकता।

संसार में कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें पठान अपने प्राणों से भी प्रिय और अमूल्य समझता है, किन्तु ऐसी भी कई हैं, जिन्हें वह दूसरे के प्राणों से भी प्रिय और बहूमूल्य समझता है। ये वृद्ध महानुभाव कभी युवा और प्रमत्त थे। उन्होंने कुछ निर्बल लोगों के अधिकारों को पद–दलित कर डाला था, किन्तु उन निर्बल लोगों ने अत्ता को उत्पन्न किया, पाला–पोसा और परवान चढ़ाया। नवयुवक हृष्ट–पुष्ट अत्ता ने देखा कि जब कुछ चीज़ों और व्यक्तियों की बात चलती है तो उसकी माँ का सिर झुक जाता है और उसके भाइयों की आँखें धरती में गड़ जाती हैं, और अत्ता को शीघ्र ही समझ आगई कि उसे इन बुजुर्ग को मृत्यु की गोद में सुलाना चाहिए, नहीं उसे भी अपने

भाइयों की भाँति लज्जा से सिर झुकाना होगा। अत्ता इतना सुन्दर और बलवान् था कि वंश के कलंक का दाग़ अपने माथे पर लगाए रखना उसके लिए असंभव था। इसलिए एक दिन उसने अपनी राइफ़िल उठाई और इन वृद्ध को अपनी गोली का निशाना बनाकर उस कलंक के दाग़ को सदैव के लिए अपने वंश के मस्तक से धो डाला, और अपने लिए अपने शत्रुओं और जनता के हृदय में आदर और प्रतिष्ठा उत्पन्न कर ली—किन्तु इसी हत्या के कारण अत्ता की समस्त वीरता और सुन्दरता के बावजूद मेरे मन में उसके लिए असीम घृणा थी। बात यह है कि तब मुझे इन वृद्ध के अतीत का ज्ञान न था। मैंने तब उनकी श्वेत डाढ़ी और उनकी करुणार्द्र आँखें देखी थीं, उनकी दयामयी सुन्दर पत्नी देखी थी और मुझे उन परिस्थितियों का बोध न था जिनमें वह उनकी पत्नी बनने पर विवश हुई थी।

विद्रोही, निर्वासित और अभिमानी की सभी प्रशंसा करते हैं। यदि वह सुन्दर और बलवान् हो तो लोग उसके समस्त अपराध क्षमा कर देते हैं। अत्ता सुन्दर था और उसकी वीरता में सन्देह न था। देहात के बड़े बूढ़े सदैव उसकी निन्दा करते थे, किन्तु क़बीलों के नवयुवक उसकी पूजा करते थे और उसे अपना आदर्श समझते थे। तभी एक दिन वह मेरे दादा की पनचक्की के पास मरा हुआ पाया गया। सारा गाँव उसे एक बार देखने को उमड़ पड़ा, मैं भी उसे देखने को भागा। मैं उस समय केवल बारह वर्ष का था। ज्यों ही वह मरा, लोगों को उसके समस्त अपराध और अवगुण स्मरण हो आए और मुरतज़ा की प्रशंसा होने लगी, जिसने इस अत्याचारी को अपनी गोली का निशाना बनाया था। मैंने भी मुरतज़ा की प्रशंसा की। उसने मेरे अभिन्न-हृदय मित्र के वृद्ध पिता की हत्या का बदला चुकाया था और इसी कारण मुरताज़ा के लिए मेरे मन में सहसा स्नेह उत्पन्न हो गया था।

शीघ्र ही मैंने मुरतज़ा को जंज़ीरों में जकड़े हुए देखा। पुलिस की कई पल्टनों ने देहातियों की सहायता से उसे घेर लिया। मुरतज़ा ने आसानी से पराजय स्वीकार नहीं की। अपने सात साहसी साथियों के साथ वह उस समय तक लड़ता रहा जब तक उसके पास बारूद समाप्त

न हो गयी। आख़िर दिन के प्रकाश में उसने अपनी राइफ़िल एक कुएँ में फेंक दी और अपन आप को पुलिस के समर्पण कर दिया—उसने रात के समय हथियार नहीं डाले। यदि वह ऐसा करता तो पुलिस उसे और उसके साथियों को गोली का निशाना बना देती, क्योंकि मुरतज़ा के शत्रुओं ने रिश्वत से पुलिस की झोलियाँ ख़ूब भर रखी थीं।

मैंने उसे पहले-पहल तब देखा जब वह जंज़ीरों में जकड़ा हुआ था। उसके सिर पर पट्टी बँधी थी, क्योंकि एक गोली उसके मस्तक को छूती हुई चली गई थी। पुलिस उसे जंज़ीरों में जकड़े हुए गाँव में लाई। उसकी शोख़ी, शरारत और ठहाकों का अन्त न था। अपने गिरफ़्तार करनेवालों के लिए उसने ठंडे शरबत मँगाए——सारे सिपाहियों के लिए! उसका हास-परिहास और विनोदशीलता उसी प्रकार बनी रही और सारे समय वह हँसी दिल्लगी उड़ाता रहा। अभिमान से मेरा वक्ष दुगुना हो गया, और मैंने गर्वस्फीत स्वर में बड़े उल्लास से गाँव के दूसरे लड़कों को बताया कि मुरतज़ा दूर के रिश्ते में मेरा भाई है।

पुलिस उसे डिविज़नल जेल में ले गई। उसके विरुद्ध, जिसने एक हत्यारे की हत्या की थी, ब्रिटिश सरकार ने मामला चलाया और उसे बीस वर्ष कठिन कारावास का दंड दिया।

इस घटना को बीते कई वर्ष हो गए थे, जब मैं फिर उससे मिला। वह ब्रिटिश कारावास से अपना दंड भोगकर मुक्त हुआ था और मैंने हाईस्कूल और एक अमरीकी कालेज के अपने कारावास से छुट्टी पाई थी! हम दोनों शीघ्र ही गहरे मित्र बन गए। मैं मंत्र मुग्ध—सा उससे लूट—मार, मृत्यु और हत्या की कहानियाँ सुनता और वह मुझ से, उससे भी अधिक आश्चय और प्रसन्नता से अमरीका की गगन-चुम्बी अट्टालिकाओं, सह-शिक्षा, फ्रॉन्स की तरुणियों और स्पेन के तरुणों की कथाएँ सुनता।

"तुमने अत्ता का वध कैसे किया?" मैंने पूछा।

"इसमें कोई विशेष कठिनाई न थी," वह बोला, "तुम जानते हो वह जन्म से हत्यारा था। उसे गाँव में कई पुराने हिसाब चुकाने थे, इसलिए वह सदैव किसी न किसी को गोली का निशाना बनाने के लिए समुझे

सहायता माँगा करता था। मैं साधारणतयः टाल जाता, किन्तु उस दिन मैं मान गया। हम अपने गोपन-स्थल से प्रातः तीन बजे उसकी आँखों में खटकनेवाले कई लोगों में से एक को गोली का निशाना बनाने के लिए निकले। उसका कोई संरक्षक न था, क्योंकि वह किसी को नौकर न रख सकता था। मेरे तीन देह-रक्षक थे। मैंने उनमें से एक को आदेश दे दिया था कि जब मैं संकेत करूँ, वह अत्ता को अपनी गोली का निशाना बना दे।

हम एक पंक्ति में चले जा रहे थे (जैसा कि प्राय: विद्रोही डाकुओं का नियम है।) इसी प्रकार चलते-चलते हम पनचक्की के पास पहुँच गए। यहाँ मैंने अपने देह-रक्षक को संकेत किया और स्वयं ज़रा सुस्ताने को उनसे अलग हो गया। अत्ता मेरे नौकरों को समझा रहा था कि वे किस प्रकार उस व्यक्ति को गोली मारें जो उसकी आँखों का कांटा था। मैं अभी कुछ पग ही गया हूँगा कि मने गोली की आवाज़ सुनी। मैंने मुड़कर देखा, तभी मेरे दूसरे नौकर ने भी गोली चलाई।

अत्ता वहीं ढेर हो गया। हम भागे और पाँच मील तक खेतों और खाइयों को फलांगते हुए भागते गए, यहाँ तक कि हम अपने छिपने की जगह पहुँच गए।

"किन्तु तुम भागे क्यों ?" मैंने पूछा, "कौन उस समय तुम्हारा पीछा कर रहा था ?"

मुतरज़ा के शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गई। "हम मरनेवाले की आत्मा से भाग रहे थे," वह बोला, "मैंने सदैव चेष्टा की कि अत्ता से दूर चला जाऊं। अपने और उसके मध्य एक संसार की दीवार खड़ी कर दूं, किन्तु मैं कभी सफल नहीं हुआ। वह सदैव मेरे सम्मुख आ जाता है, मृत नहीं जीवित-मैं सदैव उसे अपने साथ पाता हूं, वैसे ही बातें करते हुए, बेपरवाही से क़हक़हे लगाते हुए!"

"क्या तुम उससे भयभीत थे ?" मैंने पूछा।

मुतरज़ा के स्वर में हल्की-सी तीक्ष्णता आगई, बोला-एक प्रकार की मृत्यु के अतिरिक्त संसार में मैं किसी से नहीं डरता और वह है लम्बी बीमारी के बाद की मृत्यु, जब मनुष्य एक अर्से तक रोग-शैय्या पर पड़ा रहता

है और खांसता और छींकता है, अपने समस्त प्रियजनों के लिए एक मुसीबत बन जाता है, किन्तु यों प्रत्येक विद्रोही डाकू कुछ न कुछ भयभीत रहता है। ऐसे शत्रुओं का अभाव नहीं, जो उसकी मृत्यु के लिए पर्याप्त धन और उसके पक्ष में पर्याप्त युक्तियां दे देंगे। मुझे अत्ता से भय न था, किन्तु उसका विश्वास भी न था। यदि वह मेरे चचा का वध करने की बात सोच सकता था तो मेरी हत्या की बात भी उसके मन में आ सकती थी, और जब हमें अपने प्राणों और दूसरे के प्राणों में निर्वाचन करना होता है तो हम सदैव दूसरे के प्राण चुनते हैं। बहरहाल, मुझे इस काम से अतिशय घृणा थी और मुझे अपने चचा से भी घृणा थी, जिसने मुझे इस काम के लिए विवश किया।

मुरतज़ा के शरीर में फिर एक सिहरन-सी दौड़ गई और प्रबल खेद के चिह्न उसकी भूरी आँखों में झलक उठे। "मैंने अपने चचा को भी ठिकाने लगाने की चेष्टा की थी," वह बोला, "किन्तु सफल न हुआ। मैं पकड़ा गया और मुझे दंड मिला, और जब मैं कारावास से मुक्त हुआ तो मैं .खुदाई ख़िदमतगारों में शामिल हो गया और अहिंसा मेरा सिद्धांत बन गया। अतः मेरे चचा को दीर्घायु और मुझे सुदीर्घ आत्म-ग्लानि और आत्म-संताप मिला!"

एक रिक्त तिक्त मुस्कान उसके ओठों पर फैल गई। कंधे झटकाकर उसने कहा—"जो भी हो, यदि पहले मैं उसे न मार देता तो वह मेरे चचा को मार डालता, किन्तु छोड़ो इन बातों को। कोई राग छेड़ो।

मैंने सितार उठाई और एक प्रशान्त, किन्तु दुखद-गम्भीर रागिनी छेड़ दी। हम दोनों ज्वालाओं में देखने लगे और मौन हो गए। बोलने की आवश्यकता भी न थी। मैं सब समझता था, क्योंकि मैं भी पठान था।

मुरतज़ा मुझे सदैव भाता था। पतले-पतले ओठोंवाला मेरा यह मित्र एक रहस्यमय व्यक्ति था। वह प्रसिद्ध विद्रोही भी था और .खुदाई ख़िदमतगार भी!

"अहिंसा तुम्हें कैसे पसन्द आगई?" मैंने पूछा, "अहिंसा किस प्रकार तुम्हारा सिद्धान्त हो सकता था?"

मुरतज़ा ने आँखें ऊपर उठाईं। "बात यह है," वह बोला, "आन्दोलन के उन चार वर्षों में मैं छोटे-मोटे सन्त से कम न था। मैंने अपनी इच्छाओं

के बदले अपने सपनों के अनुसार अपने आपको ढालने की चेष्टा की। उन वर्षों में मुझे वास्तविक महानता का अनुभव हुआ। यह किसी चमत्कार से कम न था। मैंने एक अस्पष्ट-सी आशा के लिए धन को कई बार ठुकरा दिया और सुन्दर लड़कियों पर कभी कुदृष्टि नहीं डाली, क्योंकि वे मुझ से रक्षा की आशा रखती थीं। प्यार करनेवाले से प्यार होना स्वाभाविक है, और विश्वास करनेवाले को कष्ट पहुँचाना कठिन! मैंने चेष्टा की कि जैसा लोग मुझे समझते हैं, वैसा ही बन जाऊँ, किन्तु तभी सन्त बनने का वह मेरा उन्माद समाप्त हो गया और मैं सहसा आकाश से धरती पर आ गिरा—ईर्षा, वासना और लालसा की धरती पर, और उस समय से मैं इसी कीचड़ में मस्त हूँ।

एक ही समय में ख़ान और सन्त बनना कठिन है। मैं सन्त नहीं रहा, किन्तु अच्छा ख़ान बना। यह अपेक्षाकृत सुगम भी था और स्वभाविक भी। मनुष्य में बुराई का अंश अधिक है, जो दंड देने को विवश करता है, किन्तु संत दंड देने की शक्ति स्वयं खो देता है। क़ानून जीवन का सार है और सन्त भी वैसा ही क़ानून तोड़नेवाला है जैसा डाकू। अन्तर केवल इतना है कि डाकू बनना सुगम है और सन्त बनना दुष्कर। मैंने सुलभ मार्ग चुन लिया और स्वार्थी तथा दुष्ट बनना स्वीकार किया। मैं जानता हूँ कि मस्तिष्क की अपेक्षा मेरा रक्त अधिक उष्ण है और दिलों की अपेक्षा प्रथा तोड़ना अधिक कठिन है, और जीवन के बदले आदर्शों पर चलना अधिक दुःसाध्य है।

प्रकृति निष्ठुर है और आदर्शों की अपेक्षा नहीं रखती, जीवन कठिन, कठोर और खुरदरा है। कपोत सुन्दर लगता है और उसका संगीत सुखप्रद होता है, किन्तु उकाब और उसके पंजों में जीवन-शक्ति है। मैंने उकाब बनना पसन्द किया, क्योंकि मैं जन्म ही से उकाब था। कपोत यदि उसे पसन्द नहीं करते तो उन्हें उसे सहन करना होगा, क्योंकि संसार तितलियों स भरपूर नहीं और सुनहला उकाब सुन्दर पक्षियों से अधिक आदर पाता है।"

मैंने मुरतज़ा के पतले ओठों की ओर देखा और मान गया। वह देर से विद्रोही निर्वासित लुटेरा था और प्रतिक्षण पुलिस और देहाती उसके पीछे रहते थे और उसके लिए कपोतों, स्वर्ण-संध्याओं और इन्द्र-धनुष के सौन्दर्य को समझना कठिन था।

चाँद की किरणें

मौन

जब मौन पर प्रेम छा जाता है तो संगीत का जन्म होता है,

जब संगीत हठ की ठानता है तो कोलाहल बन जाता है,

जब विचार को अपने ऊपर पूर्ण विश्वास हो जाता है तो वह शब्द बन जाता है,

जब शब्द नाचना चाहता है तो संगीत में परिणत हो जाता है,

जब संगीत स्वप्न-जगत में खो जाता है तो वह मौन हो जाता है,

मौन ही आदि है, और मौन ही अन्त !

भाग्य

भाग्य वाद्य-यन्त्र के उन पर्दों के समान है

जो तार की झंकार को पकड़कर उसे विभिन्नता, जीवन, आकृति और अनुभूति प्रदान करते हैं—

उस स्फटिक की भाँति जो सूर्य की श्वेत ज्योति को लेकर उसे अगणित रंगों में विभक्त कर देता है,

भाग्य के बिना जीवन एक ऐसी ध्वनि है जिसमें कोई संगीत नहीं।

अमरत्व एक–रसता से अधिक कुछ नहीं।

सन्त

संसार में सबसे बड़ा मूर्ख, सब से बड़ा सन्त भी है।

उसे धोखा देना बहुत सुगम है, क्योंकि वह स्वयं छल–कपट से अपरिचित है,

उसके सम्मुख झूठ बोलना कठिन नहीं, क्योंकि वह स्वयं झूठ बोलना नहीं जानता,

वह जन साधारण की भाँति वस्तुओं का मूल्य नहीं आँकता और इसलिए सदैव उनके लिए अधिक दाम देता है।

बुद्धिमान् लोग जिस वस्तु के लिए एक कौड़ी भी देने को तैयार न होंगे, वह उसके लिए सर्वस्व दे देगा,

और जिस वस्तु के लिए बुद्धिमान् लोग सर्वस्व देने को तैयार होंगे, वह एक कौड़ी भी न देगा।

वह अनायास ही, केवल यह देखने के लिए कि उसमें त्याग का साहस है या नहीं, बड़े से बड़ा अवसर खो देगा और मृत्यु का मुँह चिढ़ाने को उसके समक्ष हँस देगा।

वह बलशालियों के सम्मुख उद्दंड और निर्बलों के लिए दयालु होता है।

वह अपने भाई से प्रेम करता है और अपनी पत्नी से निष्कपट व्यवहार करता है।

वह संसार में सबसे बड़ा मूर्ख है—वह आलुओं के बदले फूलों को पसन्द करता है और मूढ़ राजाओं की अपेक्षा मनोरंजक भिखारियों को श्रेयस समझता है।

वह राज-भोज के बदले स्वप्न के लिए जीना चाहता है।

वह खाने की अपेक्षा सोचने को अच्छा समझता है

और सोचने के बदले नाचने को।

वह अपनी सम्पन्न सास की सेवा में विनयपूर्वक उपस्थित रहने की अपेक्षा सोना और ख़र्राटे लेना अधिक पसन्द करता है।

और वह एक घमंडी के टूटे हुए दर्प पर ठंडा फाहा रखने की अपेक्षा एक छोटे-से बच्चे को सान्त्वना देना बेहतर समझता है, जिसका नन्हा मन दुखी हो गया हो।

वह एक कुत्ते का महान् मित्र बनना पसन्द करेगा और एक महान् व्यक्ति का तुच्छ मित्र बनना उसे अभीष्ट न होगा।

वह परियों और झींगरों की कहानियाँ सुनाएगा और आप की जेब के सोने की अपेक्षा चाँद के सोने (नया चाँद सुनहरा होता है) को पसन्द करेगा।

वह संसार में सब से बड़ा मूर्ख है !

आत्मा

मैं उपवन में गया
मैंने गुलाब से पूछा—

" हे गुलाब, क्या तुझे अपनी पंखुड़ियों की कोमलता और अपने अस्तित्व के सौन्दर्य का भान है ? "

" नहीं, " गुलाब बोला—

" मैं केवल शिशिर को जानता हूँ और बसन्त को जो शिशिर के बाद आती है। "

मैंने तितली से पूछा, " ऐ मूर्तिमान् गीत, क्या तुझे अपने अस्तित्व के संगीत की मधुरता का आभास है ? "

"नहीं," तितली बोली, "मैं केवल यह जानती हूँ कि मैं तितली हूँ।"

मैंने बुलबुल से पूछा, " ऐ प्रेमी, क्या तूने अपनी प्रेयसी का मुख देखा है ? "

"नहीं," बुलबुल ने कहा, " मैं केवल अपने गीत से परिचित हूँ। "

"बेचारे मूर्ख!" मैंने मन ही मन में कहा, और इस गर्व की अनुभूति से कि मेरे शरीर में आत्मा है और मेरे मस्तिष्क में बुद्धि, और मुझे इसका ज्ञान है, उपवन से चला आया।

और कोकनार के फूल ने सिर उठाकर शरारत से मेरी ओर देखा और बोला—

" महाशय, क्या आप को अपने अस्तित्व का ज्ञान है ? "

मनुष्य

ओ तर्क के पुजारी, ओ उपदेशों के पंडित !
ओ भगवान् की दया की कहानियाँ सुनानेवाले
ओ भाग्य की महत्ता बतानेवाले, ओ प्रलय से डरानेवाले
ओ स्वर्ग और नरक की बातें सुनानेवाले
मैं इस उपवन का न माली हूँ, न राजकुमार
फिर तू मुझे इसकी उत्पत्ति की कथाएँ क्यों सुनाता है ?
मैं तो केवल शहद की मक्खी हूँ
मैं तो केवल एक छोटी-सी तितली हूँ
मैं तो इस उपवन में क्षणभर को आकर चले जाना जानती हूँ
मैं तो समीर का एक झोंका हूँ और संध्या के एक पल से परिचित हूँ
मैं तो मदिरा का एक कण हूँ
मैं तो ओठों से परिचित हूँ, प्याले को जानता हूँ
मैं तो पायल की झंकार हूँ
और नाचनेवाले के पावों की ताल को जानता हूँ
मैं तो केवल दुःख से परिचित हूँ, प्रसन्नता से भिज्ञ हूँ
तू मुझे संसार की प्रगति का इतिहास क्यों बताता है,
क्योंकि मैं न इस उपवन का माली हूँ, न राजकुमार। *

रीति-रिवाज

जब कोई नियम किसी जाति की नस-नस में रच जाता है तो वह प्रथा बन जाता है और फिर अपनी आवश्यकता और समय के पश्चात् भी प्रचलित रहता है। कारण यह है कि मनुष्य अपने बच्चों को उत्तराधिकार में न केवल अपनी आकृति या अपने स्वभाव के गुण-दोष देता है, वरन् वह उसे अपने भय और वहम्, शकाएँ और चिन्ताएँ, अपना संगीत और अपनी

* **नोट**—इस पुस्तक की समस्त कविताएँ सरहद के कवि लेवाने फ़लसफ़ी की अप्रकाशित पुस्तक से अनुवाद की गई हैं।

गालियाँ भी सिखा देता है। जहाँ तक सम्भव होता है वह अपने बच्चे को अपने साँचे में ढालने की चेष्टा करता है।

सभ्य मनुष्य यह कार्य अपने स्कूलों और पुस्तकों, अपने प्रेस और प्लेटफ़ॉर्म के द्वारा सम्पन्न कर लेता है। कभी कभी क़ानून को नई पौध के मस्तिक में अच्छी तरह से डालने के लिए वह बारूद या फाँसी का प्रयोग करने से भी नहीं झिझकता। सभ्यता क्या है ? यह जन-समूह की अपूर्णता के सम्मुख वैयक्तिक पूर्णता की निरन्तर हार के अतिरिक्त और कुछ नहीं ! सभ्यता का निर्माण प्रथा तोड़नेवाले प्रेमियों के संगीत की नींव पर नहीं हुआ, वरन् अधेड़ आयु के प्रतिष्ठित पतियों के पवित्र संकल्पों पर उसकी स्थापना हुई है। यही कारण है कि इसमें क़हक़हे का इतना अभाव है। प्रत्येक वंश उत्तराधिकार में कई सामाजिक जटिलताओं का बोध प्राप्त करता है। इसमें कुछ और वृद्धि करके अपने बाद आनेवालों के लिए छोड़ जाता है। रीति-रिवाजों, नियमों और उपनियमों का यह बोझ वंश प्रति वंश भारी होता जाता है, यहाँ तक कि उठानेवालों में इसे और अधिक सहन करने की शक्ति नहीं रहती, और अड़ड़ड़ धम् ! इतने वंशों से बना हुआ वह सभ्यता का भवन एक झटके से धराशायी हो जाता है। एक संस्कृति की मृत्यु हो जाती है। थकी-हारी जनता दौड़ से अलग हट जाती है और सुदृढ़ टांगों और लघु-भार वाले निरन्तर दौड़ते रहते हैं।

रीति-रिवाज की ये सूक्ष्म शृंखलाएं हैं जिनसे प्राचीन मनुष्य अपने समाज का ढांचा क़ायम रखने का प्रयास करता है। ये उसके स्कूल और रेडियो हैं; यह उसका उपदेशक और प्रधान-मंत्री है। सभ्य लोग एक नियम बनाते हैं और अपने निर्बल भाइयों को उसे मानने के लिए विवश करने के हेतु बारूद और सेना की पर्याप्त मात्रा अपने पास रखते हैं। प्राचीन मनुष्य एक नियम बनाता है और टोने-टोटके अथवा भूत-प्रेत का भय दिखाकर दूसरों को उसे मानने पर निवश करता है। जहाँ तक लक्ष्य और उद्देश्य का सम्बन्ध हैं, हमारे क़ानून और उसके रीति-रिवाज में कोई अन्तर नहीं। हमारे विज्ञ जजों के मुखों से वही गाम्भीर्य टपकता है, जो उसके मुल्लाओं अथवा धार्मिक

पथ-प्रदर्शकों के चेहरों पर; बल्कि वे तो उसके वस्त्र भी पहनते हैं। हमारे क़ानून उसके लिये उतने ही निरर्थक और जड़ हैं जितने उसके रिवाज हमारे लिए! रेशमी रूमाल में हो, अथवा रस्सी में, गाँठ, गाँठ है। पठान ने इस मतलब के लिए एक पतले धागे का प्रयोग किया है और हमने एक अत्यंत स्थूल जटिल रास्से का। नालियों की विस्तृत और जटिल व्यवस्था की भाँति हमारा मोटा रस्सा भी उसके लिये निरर्थक है। बात केवल गाँठ की है। यह दोनों दशाओं में वर्तमान है। कुछ लोगों का विचार है कि यह गाँठ मूर्खों ने बुद्धिमानों का गला घोटने के लिए बाँधी है, दूसरे कहते हैं कि बुद्धिमानों ने मूर्खों की सहायता के लिये इसका आविष्कार किया है। कुछ भी हो, मनुष्य की अपने बच्चे की आंखों में अपने स्वप्न-मय और आशंकाएँ उँडेलने की प्रबल, किन्तु तरुण चेष्टा के रूप में यह गाँठ वर्तमान है—दोनों दशाओं में!

आप इस गाँठ को क़ानून का नाम देते हैं और बड़ी बड़ी पोथियों में लिखकर सुरक्षित रखते हैं। प्राचीन मनुष्य इसे रीति-रिवाज कहता है और अपनी पत्नी के हृदय में सुरक्षित रखता है। आप को अपने क़ानून जानने के लिए जज या अपराधी बनने की आवश्यकता है, पर उसके क़ानून उसे घुट्टी में मिल जाते हैं। ये उसकी नस नस में रच जाते हैं, उसकी हड्डियों में मिल जाते हैं। उसने अपने देश के नियमों को तोड़ा है, यह जानने के लिए उसे किसी जज के सम्मुख उपस्थित होना नहीं पड़ता। अपराध करते ही वह स्वयं जान जाता है। वह स्वयं ही अपना जज और जेलर बन जाता है। उसके लालन-पालन में माता-पिता ने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि अपराध करने पर वह अपना जज और जेलर स्वयं ही बने।

आइए, अब पठानों के कुछ रीति-रिवाजों का अध्ययन करें, क्योंकि रीति-रिवाज उन यंत्रों के अतिरिक्त कुछ नहीं, जिनसे प्राचीन मानव अपनी संस्कृति का निर्माण करता है। यह कलाकार मानव के हाथ की तूलिका है जिसके एक प्रहार से वह अपनी मन-पसन्द संस्कृति का चित्र खींचता है। इस तूलिका का प्रहार वज्र के प्रहार-सा लक्ष्यहीन नहीं, इसका उद्देश्य है, अर्थ है, चाहे वह कितना ही भद्दा और अनगढ़ क्यों न हो।

उसके इस उग्र रिवाज को ही लीजिए जिसके अनुसार स्त्री को फुस-लाने या भगाने पर, पत्नी के साथ सम्बन्ध रखनेवाले का दंड मृत्यु है। पठान का यह प्राचीन सिद्धान्त आज भी उसके रक्त का अंश है और जब फिरंगी के बनाए ढीलेढाले क़ानून और नैतिकता से इस प्राचीन सिद्धान्त का संघर्ष होता है तो उसकी प्रतिक्रिया पठान पर बड़ी भयानक होती है। पठान अपनी बहन का पथ-भ्रष्ट करनेवाले को गोली मार देगा और बेझि-झक फिरंगी की बनाई हुई फाँसी पर चढ़ जाएगा। फिरंगी का क़ानून उस-की अपनी ठंडे दिल से सोचनेवाली बहन और निष्पक्षभाव से विचार करनेवाले भाई के लिए बना है, पठान के लिए नहीं। पठान के यहाँ लड़-कियों का अभाव और भावों की प्रचुरता है। यदि उसे वीर योद्धओं को उत्पन्न करना है तो उसे जन्म देनेवाली माँ क़बीले के लिए सब से अमूल्य निधि है, जिसकी रक्षा उसका वंश बड़ी सावधानी और निष्ठा से करेगा। यह पुरातन प्रथा कामुक व्यक्तियों को नष्ट करके उत्कृष्ट नसल की उत्पति के लिए भी आवश्यक है। बीज के चुनाव और आरोपन की यह रीति जितनी सूक्ष्म है, उतनी ही सरल आर लाभदायक है। किन्तु पठान जब क़ानून को तोड़नेवाले किसी व्यक्ति पर बन्दूक़ उठाता है, तो क्या वह इन सब बातों को समझता है? हरगिज़ नहीं। वह तो उस समय क्रोध से पागल होता है। सिवा गोली चलाने के उसके लिए दूसरा कोई चारा ही नहीं होता—यदि वह बन्दूक़ न उठाएगा तो उसके भाई उसे कायर समझेंगे, उसका पिता उसका उपहास करेगा, उसकी बहन उसकी ओर देखना भी पसन्द न करेगी, उसकी पत्नी उससे अत्यन्त उद्दंडता का व्यवहार करेगी आर उसके मित्र उसका बहिष्कार कर देंगे। किसी फिरंगी जज की भ्रान्ति का शिकार बनना (जो उसके देश के रीति-रिवाज से अपरिचित है) और फाँसी पर चढ़ जाना, अपने आत्मीयों की दृष्टि में हेय बनने से कहीं श्रेयस्कर है। इस-लिए क़बीले के प्रति उसका जो कर्त्तव्य है, वह उसे पूरा करता है, चाहे उसका दिल जाए, अथवा सिर! किन्तु वह अपने लोगों की दृष्टि में गिरना कदाचित् पसन्द न करेगा। वह अपनी पत्नी या बहन के रक्त से रँगे हाथ लिए अतिशय अभिमान और निर्भयता से चलता हुआ फाँसी के तख्ते की ओर जाएगा और उसके मित्रों और स्नेहियों की

प्रशंसा और श्रद्धा भरी निगाहें उसके साथ जाएँगी, जैसा कि वह सदैव उन लोगों के साथ जाती हैं, जो सिद्धान्त के लिए अपने प्राणों का मोह त्याग देते हैं। 'हीरो,' पठान चिल्लाते हैं; 'हत्यारा,' जज निर्णय देता है, और मैं आज तक यह नहीं समझ पाया कि इन दोनों में कौन ठीक है।

यदि इस रिवाज को बिना किसी प्रकार के हस्तक्षेप के काम करने दिया जाए तो इसका प्रभाव आश्चर्यजनक होता है। क़बायली इलाक़े (Tribal area) में, जहाँ चालीस लाख पठान रहते हैं, न कचहरियाँ हैं, न पुलिस, न जज, न जल्लाद, किन्तु व्यभिचार के कारण हत्या की घटना कभी ही होती है। गुप्त-पलायन की घटनाएं भी बहुत कम होती हैं, क्योंकि मदमाए 'मधुर ओठों' तथा 'मतवाली आंखों' को पाने के लिए भारी मोल चुकाना पड़ता है। यदि अपराधी परस्पर विवाह कर लेते हैं तो उनकी खोज शिथिल पड़ जाती है और लड़के को विवश किया जाता है कि वह क्षतिपूर्ति के लिए उस क़बीले में दो या तीन लड़कियां दे, जहां से उसने एक लड़की चुराई थी। ईश्वर न करे यदि कहीं वह उस लड़की को छोड़ दे, या उसे धोखा दे तो फिर उसे मृत्यु के चंगुल से कोई नहीं बचा सकता, क्योंकि लड़की के वंश का प्रत्येक व्यक्ति उसके प्राणों के पीछे पड़ जाता है और उसका अपना वंश उसकी रक्षा करने से बिलकुल इन्कार कर देता है। रिवाज अपना गला काटनेवाले से किसी प्रकार की सहानुभूति नहीं रखता। रिवाज तोड़नेवाला अकेला रह जाता है और जब वह रिवाज तोड़ने का मूल्य दे देता है तो उसकी अर्थी के साथ उसके मित्र भी नहीं जाते। यह रिवाज कठोर और पाशविक है, किन्तु यह बहुत प्रभावशाली साबित होता है। भेड़ियों को सिधाने के लिए भेड़ियों ही के हंटरों की ज़रूरत है, कुत्तों के हंटरों से वहाँ काम नहीं चल सकता।

इसके अतिरिक्त इन रिवाजों के पक्ष में एक और भी युक्ति है। पठान के यहां न अस्पताल हैं और न डॉक्टर, और इस बात को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि पुरुष से स्त्री को और स्त्री से पुरुष को भयानक रोग लग जाते हैं। उपदंश ही को लीजिए। पठान इसकी चिकित्सा से नितान्त अनभिज्ञ था, अतः इस रोग की रोक-थाम के लिए उसने कठोर से

कठोर ढंग प्रयुक्त किए—जो व्यक्ति अपने वंश के स्वास्थ्य से खेलना चाहे, उसे सीधे मृत्यु के घाट पहुँचा दिया जाएगा। सभ्य देश तोड़-फोड़ करनेवाले या विश्वास-घातक को मृत्यु दंड देते हैं—गांठ वही है, यद्यपि सूत्र भिन्न हैं।

जन्म—मरण, ब्याह—शादी, प्रेम—घृणा, युद्ध—सन्धि के विषय में सहस्रों रिवाज पठानी क़बीलों में पाए जाते हैं। उनकी गिनती करना अथवा एक हल्का-सा ख़ाका खींचना कठिन ही नहीं, लगभग असम्भव है, किन्तु इतना कहा जा सकता है, वे सबके सब उस जीवन-पद्धति और आदर्शों को सुरक्षित रखने की चेष्ठा में बनाए गए हैं, जिसने संसार को महान् योद्धा और साधारण सैनिक दिया। पठानों के कई रीति-रिवाज उनके पराक्रमी यूननी पुरखों से भी प्राचीन हैं, किन्तु उनके यहाँ कई ऐसे भी रीति-रिवाज हैं जो विचार और जीवन के उस ढंग का चित्र खींचते हैं जिसने संसार को सिकन्दर महान् और उसके विजयी सैनिकों से परिचित कराया।

जब पठान अभी बच्चा होता है, उसकी माँ उसे बताती है कि कायर मर जाता है, किन्तु उसकी चीखें उसके बाद मुद्दत तक जीवित रहती हैं। इसलिए वह अपनी चीख़ों को दबाना सीख जाता है। उसे बीसियों चीज़ें जीवन से प्रिय और मूल्यवान् बताई और दिखाई जाती हैं, ताकि यदि अवसर आए तो उनकी रक्षा के लिए जीवन का मोह न करे। उसे रंगीन भड़कीले कपड़े पहनने और भावों को उद्दीपित करनेवाले राग-गाने का निषेध कर दिया जाता है, क्योंकि इससे बाहुबल में कमी और आँखों में नम्रता आती है। उसे बाज़ से प्यार करना और बुलबुलों को भूलना सिखाया जाता है। उसे अपने बच्चों के अन्तस्थल और आत्मा की रक्षा के लिए अपनी (कुचरित्र) पत्नी को मृत्यु के घाट उतारना सिखाया जाता है—यह मनुष्य और उसकी विज्ञ-मूर्खताओं के सामने मनुष्य की आदिकाल से चली आनेवाली निरन्तर पराजय के अतिरिक्त कुछ नहीं।

मैं और आप प्रति-दिन यही करते हैं। इस प्रजातंत्रवादी युग में रिवाज तोड़नेवाले प्रेमियों के लिए बहुत कम स्थान है। प्रतिष्ठित, वृद्ध और बुद्धिमान् लोग नियम और रीति-रिवाज बनाते हैं, ताकि वे जीवन के यौवन और विद्रोह को अपने मनभाए साँचे में ले आएँ। एक चित्रकार एक

भाव या मुद्रा अंकन करने के लिए कई रंग और रेखाएं प्रयोग में लाता है, और एक संगीतज्ञ मनचाहे संगीत के लिए कई तानें। जो रंग या तान इस तन्मयता में बाधा उपस्थित करती है, उसे समाप्त होना पड़ता है, चाहे इस-से चित्रकार या संगीतज्ञ को कितनी भी मानसिक या शारीरिक पीड़ा क्यों न हो।

नियम और रीत-रिवाज मनुष्य को उस चीज़ से बचाते हैं जो उसके लिए आवश्यकता से अधिक अच्छी या बुरी होती है-वे एक माप निर्धारित कर देते हैं और जो उस पर बड़े या छोटे होने के कारण पूरे नहीं उतरते उन्हें हटा देते हैं। पठान के रीति-रिवाज सभ्य-समाज के नियमों जैसे ही हैं। उनके गुण भी उनमें उपस्थित हैं और दोष भी-दोनों विद्रोहियों को सहन नहीं करते और दोनों अपनी उन्नति के लिए इन्हीं विद्रोहियों का आश्रय तकते हैं।

टोने-टोटके, शाह साहब ऐंड कम्पनी

मेरा लगानदाता (Tenant) मेहर यद्यपि देखने में ऐसा सुन्दर न था फिरभी उसके मंगोली ढंग के चेचक-भरे मुख में दो हरी आंखें चमका करती थीं। उसके कंधे अतीव बलशाली और वक्षस्थल चौड़ा था। उसके अंग तेजमय थे और उसमें एक बैल जैसी शक्ति थी, किन्तु अपनी चंचल आंखों के कोनों से वह इस प्रकार देखने का आदी था कि मुझे सदा उस पर क्रोध आ जाया करता था—मेरे गांव में वह सर्वोत्तम कृषक और सबसे बड़ा चोर था।

एक पठान गांव के ख़ान की हैसियत से, जिसके दूसरे कर्त्तव्यों के अतिरिक्त नियम–विधान और सार्वजनिक शान्ति क़ायम रखने का उत्तर-दायित्व भी होता है, मेहर और मुझ में कभी न पटती थी। वह भी मेरी ही भांति रीति–रिवाज और नियम-विधान से घृणा करता था। अन्तर केवल यह था कि वह उन्हें तोड़ने की प्रसन्नता प्राप्त कर लेता था और मुझे उसके मस्तिष्क पर उनकी महत्ता अंकित करने का कटु-कर्त्तव्य पालन करना पड़ता था, क्योंकि चाहे हमारे रीति-रिवाज कितने ही कठोर और अत्याचारपूर्ण क्यों न हों, पठान को ठीक रास्ते पर चलाने के लिए वे अनिवार्य हैं। एक उद्दंड घोड़े को उसकी युवा उच्छ्रंखलता और संसार को उसकी विनाश-कारी शक्ति से बचाने के लिए मोटी रस्सी ही की आवश्यकता पड़ती है। मुझे इस उद्दंड घोड़े को उसके रीति-रिवाज सिखाने पड़ते और यह उसे पसन्द न था। मैं भी इस कर्त्तव्य-पालन को इतना पसन्द न करता था, क्योंकि मैं न तो पैग़ंबर हूं, न सेना-नायक। मैं कवि हूं और किसी चंचल घोड़े को किसी अस्तबल में बँधे हुए बरबस आचार-व्यवहार निगलते हुए

देखने की अपेक्षा मैं उसे यौवन की मादकता में कूदते-फांदते और नाचते देखना अधिक पसन्द करता हूं।

खैर, मेहर को इस प्रकार बँधना और अपने देश के रीति-रिवाज चबाना ज्यादा पसन्द न था और वह इससे बच गया। टाइफ़ॉइड से उसकी मृत्यु हुई।

जब मैं उसे देखने को गया तो वह मृत्यु-शैय्या पर तड़प रहा था। उसकी हृष्ट-पुष्ट देह ने आत्म-समर्पण करना स्वीकार न किया था, किन्तु उसकी आँखें थकी हुई दिखाई देती थीं।

उसके प्रियजन अत्यन्त आकुल और हताश थे। मैंने जिन डॉक्टरों की प्रशंसा की थी, उन्हें वे एक-एक करके आज़मा चुके थे और अपने गाढ़े पसीने की कमाई रंगीन और गंधयुक्त पेय की शीशियों पर ख़र्च कर चुके थे।

उसकी माँ ने मेहर को मृत्यु से भारी संघर्ष करते देखा तो सहसा चिल्ला उठी—"टोना-टोना, इस पर किसी ने टोना कर दिया है; देखो, इसका शरीर पहाड़–सा है, किन्तु फिर भी हार गया है," उसने अपने बूढ़े पति से कहा, "यदि यह कोई रोग होता तो उन बड़े बड़े डॉक्टरों में से कोई तो जान पाता और इसे उचित औषध देता, किन्तु यह तो रोग नहीं, जादू-टोने का प्रभाव है।"

"स्त्रियों की बातें भी–" उपेक्षा से उसके पति ने अपने दूसरे लड़के उस्मान से कहना चाहा, जो समीप ही भ्रूभंग किए चिन्तित खड़ा था।

"देखो इसकी बात!" उसकी बूढ़ी अम्माँ बोली, "यह अपने पढ़े-लिखे ख़ान लोगों की संगति में बैठकर उन्हीं जैसा हो गया है और झाड़-फूँक, दुआ और टोने-टोटके में विश्वास नहीं रखता, किन्तु तुम्हें उमर की बात याद नहीं? उसे भी ऐसी ही बीमारी हुई थी और कोई औषध काम न करती थी और लोग परियोंवाले शाह साहब को बुलाकर लाए थे। उन्होंने जादू का पता चलाया था और खुदा की रहमत और अपने आकाओं की पाक रूहों की सहायता से शाह साहब ने उमर के प्राण बचा लिए थे। देर तो लगी, पर वह बच गया था और वह अभी तक जीवित है

तुम्हें क्या याद नहीं ? तुम और तुम्हारे ख़ान चाहे जो कहें, पर शाह साहब देहात में रोज़ कई जानें बचाते हैं।"

उस्मान ने स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया। "कोशिश कर देखने में क्या हानि है ?" उसने कहा, "हम अंग्रेज़ी दवा करते रहेंगे और शाह साहब को भी अपनी-सी कर देखने का अवसर देंगे। कौन जानता है, मेहर बच ही जाए !"

"अच्छा, बुला लाओ," उसके पिता ने कहा, 'और तुम्हारी अम्मा की कैंची-सी चलनेवाली ज़बान पर हज़ार लानत !"

और क्योंकि उसके बाद घर में ठहरना उसके लिए कठिन हो गया, इसलिए वह बेड़बड़ाता हुआ अपने खेतों को चला गया।

उस्मान गया और संध्या समय शाह साहब को लेकर लौट आया। यह सब मुझ से गुप्त रखा गया, क्योंकि मैं न केवल जादू-टोने में विश्वास नहीं रखता, वरन् जादू-टोने या झाड़-फूँक करनेवालों के प्राणों का शत्रु हूँ, और यदि कोई मेरे हाथ आ जाए तो उसे सस्ता नहीं छोड़ता। मैं खुले-आम अपनी इस इच्छा की घोषणा कर चुका था कि मुझे शाह साहब मिलें तो उनकी चिकनी गर्दन मैं अपने दोनों हाथों में दबाऊँगा और उनसे कहूँगा कि अपने जादू का समस्त बल लगाकर उसे मेरे चंगुल से छुड़ाएँ।

जादूगर, मुल्ला और टोने-टोटके वाले मानव के सब से बड़े शत्रु हैं। ये उसकी आत्मा में अंधकार उँडेलकर उसके मस्तिष्क को निस्तेज कर देते हैं। ये उसकी उन्नति को रोक देते है और क्योंकि ये स्वयं अज्ञान पर फलते-फूलते हैं, इसलिए ज्ञान के विरुद्ध मोर्चा-बँदी करते हैं और ज्योति के नाम पर अंधकार की और ख़ुदा के नाम पर शैतान की पूजा करने का उपदेश देते हैं। ये आत्मा को जंग लगा देनेवाले अज्ञान के दूषित कीटाणु साथ लिए फिरते हैं और दिलों में इसका इन्जेक्शन कर देते हैं। ये प्रथम श्रेणी के राष्ट्रीय प्लेग हैं, क्योंकि मैं अपने छोटे-से गाँव का दयानतदार हेल्थ ऑफ़िसर (Health Officer) हूँ, इसलिए मैं सदैव शाह जी से मिलना और अपने गाँव को इस प्लेग से मुक्त कराना चाहता था।

शाह जी पतले-दुबले छोटे-से व्यक्ति हैं। उनके मुख से सौम्यता

और शिष्टता टपकती है। उनकी पतली-सी खिचड़ी डाढ़ी बड़ी व्यवस्था से सँवरी रहती है। उनके तेल में सने चमकते हुए बाल लम्बे और घुँघराले हैं। सिर पर सदैव वे मुल्लाओं-जैसी सफ़ेद पगड़ी बांधते हैं और शरीर पर सफ़ेद लम्बा लबादा ओढ़े रहते हैं, जिससे देखनेवाले को पवित्रता का आभास मिले। उनका व्यक्तित्व गम्भीर और रहस्यमय है और उनके मुख पर सदा पैग़म्बरों-जैसी शान्ति और गम्भीरता छाई रहती है।

क्योंकि शाह साहब ने अपना सम्बन्ध एक प्रसिद्ध दरवेश (सन्त) के वंश से जोड़ रखा है, इसलिए ज्यों ही उन्होंने गांव में प्रवेश किया, समस्त गांववाले अपना-अपना काम छोड़कर सम्मानार्थ उठ खड़े हुए। वे सीधे ज़नाने में गए, जहां स्त्रियों से घिरा मरणोन्मुख मेहर छटपटा रहा था—शाह साहब सदैव स्त्रियों में प्रसन्न रहते हैं, क्योंकि वे परेशान करनेवाले प्रश्न नहीं करतीं और उनसे उन्हें सहानुभूति मिलती है—उन्होंने कुछ क्षण मेहर की आंखों में देखा, भृकुटी चढ़ाए कुछ बुदबुदाए और एक दीर्घ निश्वास लिया। स्त्रियों में एक सनसनी दौड़ गई। उनकी आंखें खुली रह गईं और वे शाह साहब के मुख से निकलनेवाले प्रत्येक शब्द को दत्तचित्त होकर सुनने को तैयार हो गईं। शाह साहब ने मेहर को, उसके हृष्ट-पुष्ट और तरुण शरीर को देखा और एक और दीर्घ निश्वास छोड़ा। फिर कुछ रुककर उन्होंने कहा, "किसी लड़की ने इस पर जादू कर दिया है।" स्त्रियों में फिर सनसनी की एक लहर दौड़ गई। मेहर की मां सन्तुष्ट हो गई और गर्व से उसने आस पास की स्त्रियों से कहा, "मैंने कहा न था कि यह किसी दुष्ट लड़की की करतूत है जो मेरे सुन्दर मेहर से प्रेम करती है।" और समस्त वृद्धाओं ने युवा तथा क्वारी लड़कियों पर एक तीक्ष्ण दृष्टि डाली, जिससे वे बेचारी बहुत परेशान हुईं।

शाह साहब बैठ गये। उन्होंने एक पुस्तक निकाली जिसमें जादू के कई सूत्र और रेखा-चित्र थे। उसके बाद उन्होंने एक कोरा काग़ज़ निकाला और उस पर रेखा-चित्र बनाकर कुछ दम पढ़ने लगे। वे कुछ रेखाएं खींचते जाते और दम पढ़ते जाते। इस समय उनकी भृकुटी चढ़ी रही और उनके मुख पर भारी गम्भीरता छाई रही। अन्त में उनके मुखपर प्रसन्नता की

एक लहर दौड़ गई और वे मेहर की मां की ओर मुड़े जो उनके जादू का परिणाम सुनने के लिए कितनी देर से सांस रोके खड़ी थी। "अम्मां," उन्होंने प्रसन्नता से कहा," मेरा बिचार है, कि हम वह टोना ढूंढ़ निकालने में सफल होंगे जिसने मेहर को बेबस कर रखा है। हमारी सफलता के लिए प्रार्थना करो!"

और यह कहकर वे उस्मान की ओर मुड़े, "मेरे बच्चे, एक कुदाली ले लो और मेरे साथ आओ।"

उस्मान ने कुदाली उठाई और स्त्रियों को उच्च स्वर में दुआएँ करते हुए छोड़कर दोनों चले गये।

रास्ते में उनके साथ और भी लोग मिल गये, किन्तु उन्हें वहीं रोककर शाह साहब अकेले उस्मान को लेकर आगे बढ़े। अन्त में उन्होंने उस्मान को एक स्थान खोदने के लिए कहा। जब लगभग एक फुट स्थान खुद गया तो शाह साहब ने अपनी उँगलियों से उसमें टटोलना आरम्भ किया। टोना नहीं मिला। शाह साहब के मुख पर हल्की-सी निराशा दौड़ गई। उस्मान की श्रद्धा को हल्की-सी ठेस लगी। शाहजी ने एक दूसरे स्थान की ओर संकेत किया और उसे वहां खोदने को कहा। जब वह दस मिनिट तक खोद चुका तो शाहजी पहले गढ़े से उठे और उन्होंने पूछा, "कुछ मिला?" उस्मान ने सिर हिलाया। शाहजी ने एक तीसरे स्थान की ओर संकेत किया। उस्मान बहुत निराश हुआ। उसे अपनी श्रद्धा बिलकुल जाती हुई लगी। अत्यन्त क्रोध से वह तीसरा स्थान खोदने लगा। शाह साहब उतने समय पहले गढ़ों में ढूंढ़ते रहे। अन्त में वे उसके पास आए और अपने ओठों पर एक खिन्न-सी मुस्कान लाकर उन्होंने कहा, "मुझे स्वयं समझ में नहीं आता, आख़िर बात क्या है? ख़ैर, उस्मान, तुम तीनों गढ़ों की खोदी हुई मिट्टी को भली भांति देखो। इतने में मैं और जगह देखता हूं। लानत हो इस दुष्ट लड़की पर!"

शाह साहब कुछ दूर चौथी जगह देखने लगे और उस्मान खोदी हुई मिट्टी में निरीक्षण करने लगा। आख़िर उसे एक अढ़ाई इंच लम्बी शीशी मिली (जो बड़ी आसानी से हाथ या ज़ेब में छिपाई जा सकती थी) "या ख़ुदा!" वह प्रसन्नता से चिल्लाया, "यह रहा टोना!"

उस्मान की आँखें चमक रही थीं। उसके स्वर में थरथराहट थी और उसकी समस्त श्रद्धा लौट आई थी।

उसने देहातियों को आने का संकेत किया और अपने भाइयों को बुलाया। सब भागे आए और उन्होंने उस्मान और शाह साहब को घेर लिया। शाह साहब ने शीशी का ढक्कन खोला, उसमें से एक छोटा-सा कपड़े का गुड्डा निकला जो बड़ी निपुणता से बनाया गया था। शाह साहब ने उसे शीशी से निकाला और उसका निरीक्षण किया—"ओ दुष्ट लड़की, ख़ुदा तेरा सर्वनाश करे!" उन्होंने कहा, "देखो, इस गुड्डे पर टोना करके इसे कैसा सुइयों से बेध रखा है। यह एक-एक सुई मेहर के लिए एक--एक तलवार से कम नहीं।

भोलेभाले देहातियों में सनसनी दौड़ गई। मेहर का पिता भी आश्चर्यान्वित मुँह खोले खड़ा रह गया। यह सूचना स्त्रियों को पहुँचाई गई। उनके आह्लाद की सीमा न रही। शाहजी ने उन सुइयों को निकाला और उनकी उपस्थिति में गुड्डे को जला डाला। उन्होंने क़ुरान से दुआएँ पढ़ीं और मेहर के चेहरे को फूँका। वहाँ उपस्थित सब स्त्रियों को आशीर्वाद देकर और टोना करनेवाली अज्ञात लड़की को भयानक अभिशाप देकर उन्होंने आज्ञा चाही।

मेहर की बूढ़ी माँ ने उनके चरणों की रज ली और कृतज्ञता के आँसू बहाते हुए उनके हाथ का चुम्बन लिया।

जब शाह साहब मरदाने में चले गए तो मेहर की माँ ने उस्मान को आवाज़ देकर कहा कि चाय और मलाई से शाह साहब की आव-भगत करे। उस समय जब शाह साहब गांववालों की श्रद्धा और सम्मान का आनन्द ले रहे थे, उस्मान अन्दर गया। उसकी मां ने मैले नोटों की एक गड्डी उसके हाथ में दी, जिसे उन्होंने वर्षों के कठोर परिश्रम से जोड़ा था। "कृतज्ञता के रूप में इसे शाह साहब को दे आओ!"

"किन्तु अम्मा, इनसे तो एक अच्छा बैल ख़रीदा जा सकता है।"

"क्या बैल तुम्हें मेहर से ज्यादा प्यारा है?"

उस्मान मौन हो गया। वह बाहर मरदाने में गया। शाह साहब को अलग ले जाकर उसने नोट उनके हाथ में थमा दिए और अपनी निर्धनता का जिक्र करके क्षमा मांगी।

शाह साहब ने बड़ी उदारता से उन्हें स्वीकार कर लिया और कहा कि वे अपनी सेवाओं का पारिश्रमिक लेने की बात स्वप्न में भी नहीं सोचते, किन्तु यदि धन्यवाद के रूप में कुछ दिया न जाए तो जादू का प्रभाव नहीं होता!

यह कहते हुए वे लौट आए, एक काग़ज़ पर एक और मंत्र लिखा और कहा कि इसे मेहर के सिर से बांध दिया जाए, और इस प्रकार अपनी 'अमूल्य' सेवाएं अर्पण करके अपने श्रद्धालुओं के साथ गांव से चले गए।

दूसरी सुबह मेहर मर गया। उसके कफ़न-दफ़न का ख़र्च मुझे करना पड़ा। उसकी क़ब्र पर दुआ पढ़नेवालों को पारिश्रमिक देने के लिए उसके पिता ने मुझ से ऋण लिया और अपने बैल बेचकर अपने उन मित्रों और सगे-सम्बन्धियों को खाना खिलाया जो इस दुःख में सहानुभूति के लिए आए थे।

मैं अब तक शाह साहब को ढूंढ़ रहा हूं। यदि किसी दिन आप सुनें कि ख़ां अब्दुल ग़नी ख़ां को हत्या के अपराध में पकड़ लिया गया है तो आप समझ लीजिएगा कि मैं शाह साहब को पा गया हूं!

प्रतिशोध

शेरख़ाँ एक दुर्बल, धर्मात्मा ख़ान का लड़का था। उसका पिता गाँव के एक छोटे-से टुकड़े का स्वामी था, शेष पर उसके शक्तिशाली भाई-बन्धुओं का अधिकार था। वे सब परस्पर प्रभुत्व और प्रभाव के लिए लड़ते रहते थे, किन्तु शेर के पिता को कभी कोई तंग न करता। इहलोक में शेर का पिता, क्योंकि अधिक प्राप्त न कर सका, इसलिए उसने अपनी समस्त आकांक्षाएँ परलोक के लिए सुरक्षित कर रखी थीं। उसने मुल्लाओं जैसे कपड़े पहन लिए थे, अपनी बन्दूक़ के स्थान पर हाथ में माला थाम ली थी और हुजरा छोड़कर एक मस्जिद में जा शरण ली थी।

ख़ुदा के भय और अपने भाइयों के भय को उसने अपने मन में बेतरह मिला रखा था। अपनी कायरता को उसने एक बड़ा सन्त बनकर छिपाने की चेष्टा की और अत्यन्त शुष्क और नीरस बन गया था। वह सदैव सिगरेट-हुक्का पीने और नसवार प्रयोग करने के विरुद्ध उपदेश दिया करता। उसने एक बड़ी प्रभावशाली डाढ़ी बना ली थी और मुस्कान को सदा के लिए अपने ओठों से देश-निकाला दे दिया था। पित्त के रोग को वह आत्मा की महानता समझता और उसकी पत्नी को इसका मूल्य चुकाना पड़ता।

इस लिजलिजे-पिलपिले व्यक्ति का लड़का शेर शक्ति और सामर्थ्य में पहाड़ था—उस सबल स्त्री की उंमगों का प्रतीक, जिसने एक निर्बल पुरुष से विवाह किया था। जब शेर बहुत छोटा था तब भी उसके पिता को कभी उसे डाटने-डपटने का साहस न हुआ था। जब उसने उन्नीसवें वर्ष में पांव रखा तो वह अत्यन्त बृहद्काय, वीर्यवान्, उद्दंड और घमंडी निकला। वह अपने निर्बल पिता से घृणा करता था और अपनी लघुकाय सबल मां को उपेक्षा से देखता था, किन्तु इसके बावजूद वे दोनों उसकी पूजा करते थे।

उसके पिता को उसमें वह सब कुछ दिखाई देता था जो उसे स्वयं प्राप्त न था। निरंकुश सत्ता, आदेश-पूर्ण, गर्व-स्फीत व्यवहार सुन्दर मुख और चंचल आंखें! और उसकी मां को अपने पति की चिड़चिड़ाहट की तुलना में अपने बेटे का आदेशपूर्ण स्वर बहुत भला लगता। वे दोनों उसकी पूजा करते और वह उन दोनों को पग-धूलि से अधिक महत्व न देता, किन्तु गांव के नवयुवकों से उसे बहुत प्रेम और अनुराग था। वह उनके साथ खाता, पीता, सोता और जुआ खेलता। वह उनके हृदय में अपने लिए श्रद्धा उत्पन्न करना और उस श्रद्धा का पूरा-पूरा लाभ उठना भली भांति जानता था।

उसके चचा दिलेरख़ां ने तुरन्त उसके इन गुणों को ताड़ लिया। दिलेरख़ां पुराना पाजी था। वह सदा निर्बलों को डाट-डपट कर रखता और गाँव पर अपनी शक्ति का भय जमाए रखता। प्रसन्न-प्रशस्त-मुख और हाथी की सी आंखें। वह बला का पेटू और दक्ष शिकारी था। सदा ऋण-ग्रस्त रहता, किन्तु उसकी उदारता और अतिथि-सत्कार में अन्तर न आता। उसका अट्टहास गगन-चुम्बी था, जिससे वह अपने अतिथियों का स्वागत भी करता और उन्हें प्रसन्न भी कर देता। वह खाने पीनेवाला मनोरंजन-प्रिय व्यक्ति था और अपने साधु भाई से अत्यन्त घृणा करता था, क्योंकि उसका यह धर्मात्मा भाई उसे मौत और शैतान की याद दिलाना न भूलता और किसी भी मनोरंजन-प्रिय व्यक्ति को यह बात अभीष्ट नहीं होती कि उसे उठते-बैठते मौत और शैतान की याद दिलाई जाए। दिलेरख़ां को अपने भाई का व्यवहार संकीर्ण, अनुदार, ईर्षालु और प्रतिशोध-पूर्ण लगता और वह समझता कि उसे यंत्रणा देने के लिए ही उसने यह सब आविष्कार किया है। दिलेर ने अपने इस छोटे निर्बल भाई को पहले खेल के मैदान और फिर गांव से भगाकर मस्जिद में शरण लेने को विवश कर दिया था। वह अब गांव का एक-छत्र ख़ान था और उसका भाई गांव का एकमात्र मुल्ला। दिलेर शिकार करता, गाता और अपने साथियों को दावतें देता और उसका भाई अपना सारा समय ख़ुदा की इबादत करने, उससे गिले-शिकायतें करने और छोटे-छोटे गुणों का बड़े बड़े शब्दों में बखान करने में व्यतीत करता। दोनों अपनी अपनी जगह महान् थे और जहां तक गांववालों पर उनके प्रभाव

का सम्बन्ध था, यह प्रबंध काफ़ी सन्तोष जनक था, किन्तु तभी एक ऐसी बात हुई जिससे इस प्रबन्ध को भारी धक्का लगा और दिलेरख़ां की प्रतिष्ठा और प्रभाव का साझीदार गांव में आ गया।

बात यह हुई कि साथवाले गांव में दिलेर के चचा का लड़का क़ुरबान, उस हत्या के अभियोग में, जो उसके बदले किसी और ने की थी, आजीवन-कारावास का दंड भोग कर आ गया। चाहे वह हत्या, जिसके फलस्वरूप उसे दंड मिला, उसने नहीं की थी, किन्तु वह एक ज़बरदस्त लड़ाका प्रसिद्ध था, और गांव में उसकी वीरता, निडरता और न्याय-प्रियता की धाक थी। ऐसी ही एक लड़ाई में क़ुरबान की बन्दूक़ से उसके चचा (दिलेरख़ां के पिता) की टांग में गोली लग गई थी। उसके चचा ने उसे क्षमा कर दिया था (क्योंकि यह भूल से लगी थी), किन्तु लोगों ने उसे क्षमा न किया था— और दिलेरख़ां के सिर अपने पिता पर आक्रमण का प्रतिशोध लेना बाक़ी था।

चौदह वर्ष कठिन-कारावास का दंड भोगने के पश्चात् क़ुरबान समझता था कि उसने अपने समस्त पापों का प्रायश्चित कर दिया है। जब वह कारावास से बाहर आया तो उस साहसी और प्रचंड लड़ाके में एक भारी परिवर्तन आ गया था। अब वह एक भला व्यक्ति था जिसके हृदय में अपने साथियों के लिए दया और प्रेमभाव के अतिरिक्त कुछ न था। देहाती उसे देखने को गए तो उन्होंने निर्भीक, साहसी वीर के स्थान एक ऐसा व्यक्ति पाया जो स्पष्टवादी, सरल, सच्चरित्र, परोपकारी, समवेदनाशील, नम्र और दयालु था। तब देहातियों ने उसके साहस और वीरता की उन बातों को याद किया जो उसने यौवन में सरअंजाम दीं और उसके इस रूप को देखकर वे उससे और भी प्रेम करने लगे।

दिलेरख़ाँ के घर में लोगों की संख्या घटने लगी और क़ुरबान के यहाँ बढ़ने लगी। दिलेर बेपरवाही से ख़र्च करता, उन्मत्तों की भाँति शिकार करता, राजसी भोज देता और बेसोचे समझे ऋण लेता, किन्तु इस सबके बावजूद क़ुरबान के यहाँ वे लोग सुगमता से चले जाते, जिन्हें वह अपने यहाँ देखना चाहता।

दिलेरख़ाँ के यहाँ प्रति दिन एक समूची भेड़ भूनी जाती। वह

दस्तरख़ान पर बैठा लोगों को चटख़ारे ले-लेकर उन्हें खाते देखता और अनुभव करता कि वे लोग वहाँ भेड़ के लिए आते हैं, उसके लिए नहीं। उनमें से एक भी उन शानदार दावतों का अधिकारी नहीं। इसके विपरीत क़ुरबान के यहाँ अतिथि अधिक बलशाली और निष्ठावान् थे और सेवक साहसी और विश्वसनीय! दिलेर क़ुरबानख़ाँ के प्रफुल्ल बदन और उसके सरल अतिथि सत्कार से मन ही मन घृणा करने लगा, क्योंकि इसके कारण उसकी प्रतिष्ठा लगभग समाप्त हो चली थी।

उन्हीं दिनों शेरखां ने नव-वय में पदार्पण किया और उसकी सुन्दरता, शक्ति और घमंड की चर्चा गांव में घर घर होने लगी। दिलेरख़ां ने उसकी नीलिमामय श्वेत आंखों को देखा और उसके शरीर में कँपकँपी दौड़ गई। वह शेरखां के हुजरे में यौवन के मदभरे गाने सुनता और अपने कंठ से निकलने वाली बुढ़ापे की खांसी के भारी स्वर से उसकी तुलना करता। तभी उसका हाथ अपनी पिस्तौल पर चला जाता और उसकी आंखें अपने पांच वर्ष के बच्चे की ओर उठ जातीं। एक दिन ऐसी ही मानसिक अवस्था में उसने अपने नन्हे बच्चे की नन्हीं आंखों में देखा और गहरे गम्भीर स्वर में कहा--"दिलावर, मेरे बच्चे, तू ही इस गांव का ख़ान होगा। फिर इसके लिए चाहे मुझे अपनी आत्मा का भी गला क्यों न घोटना पड़े।"

दूसरे दिन उसने दोपहर के खाने पर शेरख़ाँ को आमंत्रित किया और उपहार के रूप में उसे एक पिस्तौल दी (जिससे उत्तम उपहार पठान के लिए दूसरा नहीं)। वह अपने इस भतीजे के साथ ठहाके मारता रहा, उससे इस प्रकार विनोद-प्रमोद करता रहा जैसे वह उसका समवयस्क हो। समानता के इस व्यवहार से शेरख़ाँ बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सदा अपनी पिता की धर्मशीलता देखी थी। चचा की इस विनोद-प्रियता के कारण वह उससे प्रेम करने लगा। दिलेरख़ाँ ने अपने इस भतीजे पर उदारता से ख़र्च किया। भूने हुए भेड़ के मांस से शेर के मित्रों की दावतें कीं। उसे अपने शत्रुओं के विषय में दिलचस्प कथाएँ सुनाईं। उसे आस-पास के बड़े और प्रसिद्ध ख़ानों से परिचित कराया और उसे दूरस्थ गांवों तथा घाटियों में अपने साथ शिकार पर ले गया। वह शेर के साथ अपने बच्चे का सा

व्यवहार करता और मित्रवत् उसकी बातें सुनता। उसके खाने और आराम के विषय में विशेष चिन्ता प्रकट करता। वह उसकी मूर्खताओं पर हँसकर उन्हें अनदेखी कर देता और उसके हास्य परिहास पर क़हक़हे लगाता। दिलेरख़ां ने भरसक चेष्टा की कि शेर उससे प्रेम करने लगे और उसकी चेष्टा सफल हो गई। शेरख़ां अपनी आयु भूल गया और अपने इस अधेड़ चचा को अपना समवयस्क और मित्र समझने लगा।

जब दिलेरख़ाँ को इस बात का विश्वास हो गया कि शेरख़ाँ उसकी प्रत्येक बात पर विश्वास कर लेगा तो उसने उसे उसके दादा के विषय में बातें सुनानी आरम्भ कीं। उसने उसके दादा की उदारता, सदयता और मानवता के कई उदाहरण दिए। उसने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि वह वृद्ध ख़ान का चित्र शेर के मनपसन्द रंगों में खींचे और जब उसे विश्वास हो गया कि शेरख़ाँ अपने दादा की पूजा करने लगा है तो उसने शेर को बताया कि किस प्रकार क़ुरबान ने केवल उसके दादा का अपमान करने के लिए उस पर गोली चलाई थी।

दिलेरख़ाँ का अनुमान ठीक निकला। यह सुनकर क्रोधावेश में शेर-ख़ाँ की आँखें जलने लगीं। "मैंने तो समझा था कि गोली अकस्मात् दादा के लगी थी," उसने कहा।

"अकस्मात!" दिलेरख़ाँ व्यंग से बोला, "आज कल ऐसी अकस्मात् घटनाएँ कुछ अधिक ही होने लगी हैं। उत्तरदायित्व से बच निकलने के लिए दुर्बलों के पास इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं। उस समय तुम्हारे दादा और मेरे लिए इसे 'आकस्मिक समझने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग न था—वे बहुत निर्बल थे और म अल्प-वयस्क!"

घृणा से शेर के ओंठ टेढ़े हो गए। "तुम अपने पिता के अपमान का बदला लेने से डरते थे?"

दिलेर ने उसे अपनी बग़ल में ले लिया, "मैं तुम्हारी सहायता को तैयार हूं। यदि तुम वंश के मस्तक का यह कलंक धो दो तो मैं तुम्हें किज़ाज़ का गांव दे दूंगा।"

"मैं तुम्हें दिखा दूंगा कि भय मेरे निकट फटकता तक नहीं," शेर ने दृढ़तापूर्वक कहा।

उस रात शेर को नींद नहीं आई। वह अपने घनिष्ट मित्रों, किज़ाज़ के गांव की आय और अपने अद्भुत दादा की बातें सोचता रहा और समीप ही सोई हुई अपनी पत्नी के गदराए शरीर की स्निग्धता को भूल गया।

उस शाम सख्त ठंड पड़ रही थी। हल्की हल्की बूंदें पड़ रही थीं। क़ुरबानख़ां लगभग बुझी हुई आग को कुरेदते हुए अपने मज़ारों (Tenants) को अपने अतीत की कहानी सुना रहा था—

"तुम जानते हो, यौवन में मनुष्य कितना मूर्ख होता है," हँसकर उसने कहा, "मैं भी कभी युवा था और समझता था कि समस्त संसार मेरा है। जो व्यक्ति मेरी किसी बात से सहमत नहीं होता उसे इस जगत में जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं। एक दिन जंगी में और मुझ में झगड़ा हो गया और मैंने प्रतिज्ञा की कि मैं उसकी हत्या कर दूंगा। दूसरे दिन मैं अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने को गया और मैंने जंगी के स्थान पर भूल से अपने प्यारे चचा को घायल कर दिया। लज्जा के मारे मैं आत्म-हत्या करनेवाला था, किन्तु मेरे दयालु चचा ने मुझे क्षमा कर दिया। इससे मुझे और भी दुःख हुआ। तब एक महीने बाद किसी ने जंगी को ख़त्म कर दिया और उसके भाई ने उसकी हत्या का अभियोग मुझ पर लगा दिया। जज ने मुझे बीस वर्ष कठिन–कारावास का दंड दिया, क्योंकि मैंने स्पष्ट तौर पर जंगी का वध करने की प्रतिज्ञा की थी और लोग जानते थे कि मैं सदैव अपने वचन का पालन करता हूं। मैंने शिकायत नहीं की। जंगी के बहाने मैंने अपने समस्त पापों का प्रायश्चित् कर दिया, जो यौवन में मुझ से हुए।"

"मेरे ख़ां, तुम्हें सावधानी से रहना चाहिए, शत्रुओं का कोई भरोसा नहीं," उसके सेवक ने कहा।

क़ुरबानख़ाँ मुस्कराया, "मृत्यु मेरे पापों का अन्तिम प्रायश्चित होगी, मैं उससे नहीं डरता।"

उसी समय दो अतिथि भीतर आए। उनके कंधों पर बन्दूकें थीं।

क़ुरबानख़ाँ ने उन्हें देखा और मुस्कराया, "कहाँ से आए हो मित्रो ?" उसने पूछा।

"हम मौज़ा पत्ता से आए हैं, ख़ाँ," उन्होंने कहा, "हमारी घोड़ी गुम हो गई है, हम उसे ढूँढ़ रहे हैं।"

और वे एक कोने में बैठ गए।

सारे मज़ारे (Tenants) एक एक करके चले गए। क़ुरबान उठा, मुस्कराकर उसने नव आगन्तुकों से कहा, "मैं देखता हूँ इतनी रात गए मैं तुम्हारे लिए क्या ला सकता हूँ।"

वह भीतर गया और पन्द्रह मिनिट बाद तश्तरियों से भरी ट्रे और दया से भरी आँखें लिए बाहर आया।

"लो भाई, यही कुछ आज तुम्हारे भाग्य में था," उसने मुस्कराकर कहा।

तभी एक अतिथि ने बन्दूक़ उठाई और उसकी आँखों में दाग़ दी; दूसरे ने उसके कंधों पर फ़ायर किया। ट्रे तश्तरियों सहित धरती पर आ गिरी और क़ुरबान धम से फ़र्श पर आ रहा।

दोनों अतिथि भागे, और शेरख़ाँ से मिल गए जो समीप ही छिपा हुआ था। तीनों खेतों और फ़स्लों में से भागते हुए वहाँ पहुँचे जहाँ उनके घोड़े बँधे उनके आने की बाट जोह रहे थे। उन पर सवार होकर वे इस कर्तव्य और हत्या और घमंड और मूर्खता की इस घटना से दूर भाग गए।

शेरख़ाँ दूसरे दिन गाँव में आया और अपने चचा के जनाज़े में सम्मिलित हुआ। इतने में क़ुरबान की हत्या की बात सुनते ही दिलेरख़ाँ तुरन्त उसके घर पहुँचा और उसने उसके भाइयों को शपथ लेकर विश्वास दिलाया कि यह हत्या शेरख़ाँ ने की है। इस तरह उसने क़ुरबान का वध करने और शेर को फाँसी पर चढ़ाने और एक ही तीर से दो शिकार करने की अपनी स्कीम को पूर्ण किया।

शेरख़ाँ को चौदह वर्ष कठिन कारावास का दंड मिला। उसने कारावास में इतना अच्छा व्यवहार किया कि वह सात वर्ष दंड भोगने के

पश्चात् लौट आया। उसकी शक्ति और घमंड में कारावास ने किसी प्रकार की कमी न की, वरन् उनमें वृद्धि ही हुई। वह अधिक बलशाली और अधिक घमंडी होकर बाहर निकला।

दिलेरखां ने अपने भतीजे के सम्मानार्थ एक बहुत भारी दावत दी। शेरखां ने इसलिए उसे स्वीकार कर लिया कि वह अपनी घृणा व्यक्त न करना चाहता था, जो उसे अपने इस चचा से थी, जिसने उसके युवा प्रेम को अपनी कूट नीति की पूर्ति में साधन बनाया था और उसके हाथों अपने चचा का वध कराया था।

दावत के बाद उसने दिलेरखाँ से किज़ाज़ का गांव मांगा, क्योंकि वंश का नाम रखने के लिए उसने अपना वचन पूरा कर दिया था।

दिलेरखाँ ने दांत पीसे और इन्कार कर दिया। वह जानता था कि क़ुरबान का वंश शक्तिशाली और प्रतिष्ठित है, और यदि वह किज़ाज़ का गांव शेर को दे डालेगा तो उसे उनके रोष और प्रतिशोध का शिकार होना पड़ेगा।

शेरख़ाँ ने अतिशय घृणा से दिलेरखाँ की ओर देखा, "तुमने मेरे हाथों मेरे अपने चचा की हत्या कराई, ख़ुदा की क़सम तुम्हें उसका दंड भोगना होगा।"

दिलेरख़ाँ ने पिस्तौल पर हाथ रखा, "अपने ही भाई के वध के लिए मैं एक गांव दूंगा!" उसने कठोरता से कहा, "समझ से काम लो बच्चे! तुम इन वर्षों में समझदार हो गये हो और मैं भी! अपने बुढ़ापे में अपने यौवन की भूलों का मैं समर्थन नहीं करना चाहता। मेरे युवा भतीजे, तुम भूल गये हो कि एक पठान अपनी धरती या पत्नी को हाथ से देने की अपेक्षा अपने प्राण देना अधिक पसन्द करेगा। ये दोनों ही उसके लिए पवित्र हैं।"

शेर समझ गया और अवसर की प्रतीक्षा करने लगा। एक नवयुवक को दिलेरख़ां का निशाना करना सिखाने के लिए उसे तीन महीने लगे।

दिलेर पिस्तौल पर हाथ रखे हुए मृत्यु का शिकार हो गया। शेर अंग्रेज़ी इलाक़े से भाग गया और तभी से विद्रोही (outlaw) है।

अब वह क़बायली इलाक़े के एक गांव में दुःख और विपन्नता, गोबर और गन्दगी में रहता है। उसके स्वर का संगीत और आंखों का घमंड समाप्त हो गया है। पन्द्रह वर्ष की अवधि काफ़ी लम्बी होती है और दुःख और विपन्नता के पंद्रह वर्षों की अवधि तो और भी लम्बी होती है। समय और संसार ने शेरख़ां का गर्व तोड़ दिया है। वह गिड़गिड़ाना और विनय करना सीख गया है। वह अब शिकारी नहीं रहा, क्योंकि अब वह शिकार के हृदय की अनुभूति को जान गया है। अपने चचा क़ुरबान की भांति वह भी अब नम्र और साधु-वृत्ति बन गया है, किन्तु क़ुरबान का एक लड़का है जो पराक्रमी, घमंडी और सुंदर है और अपने चचेरे भाई शेरख़ां से ज़रा भी नहीं डरता। यद्यपि शेरख़ां समस्त क़बीले में बलवानतम् और निर्भीकतम् व्यक्ति समझा जाता है किसी दिन दोनों में मुठभेड़ होनी अनिवार्य है—प्रतिशोध और मृत्यु, मृत्यु और प्रतिशोध, और यह सिलसिला सदा चलता रहता है।

राजनीति

हमारी आप की राजनीति की भांति पठान की राजनीति भी स्वर्ण और शक्ति, भूख और महत्वाकांक्षा की धुरी पर घूमती है; क्योंकि उसकी नसों में हमारी अपेक्षा अधिक रक्त है, और उसके मस्तिष्क में हमारी अपेक्षा अधिक स्कीमें, इसलिए वह राजनीति को कुछ मनोरंजक और सजीव बना देता है।

आज के संसार में राजनीति को वही स्थान प्राप्त है जो पांच सौ वर्ष पहले के जगत् में धर्म को प्राप्त था। दोनों एक ऐसी प्रणाली के समान हैं जिसे मानवों ने बनाया है और इसके द्वारा वे धूर्त बुद्धिमानों और निष्कपट मूर्खों को अपने ऊपर शासन करने की शक्ति देकर अपनी इस मूर्खता का फल भोगते हैं। बात यह है कि प्रत्येक मनुष्य या शासन करना चाहता है, या शासित होना। तीसरा कोई मार्ग उसके लिए नहीं। हां, यदि वह कवि या पागल हो तो बात दूसरी है।

कुछ सीधा सरल और बुद्धि के मामले में स्थूल होने के कारण प्रत्येक पठान यह समझता है कि वह अपने समय का सिकन्दर महान् है और चाहता है कि जगत् उसकी इस महत्ता को मान ले। परिणाम यह है कि रिश्ते के भाइयों, सगे भाइयों और कई बार पिता पुत्रों में युद्ध होता रहता है। युगों से ऐसा होता चला आ रहा है और इस बात से उसे जितनी हानि पहुँची है, दूसरी किसी चीज़ से नहीं पहुँची। पठान एक महान् और प्रसिद्ध जाति बनाने में सफल नहीं हो सके, क्योंकि प्रत्येक घर में एक जिन्ना है जो अपने भाई द्वारा शासित होने की अपेक्षा अपना घर जला देना अधिक पसन्द करता है। उग्रता, आदेशपूर्ण स्वभाव और अंध-अज्ञान – यही पठान के सब

से बड़े "सद्गुण" हैं। जब वह दिल्ली का लॉर्ड मेयर नहीं बन सकता तो वह दिल्ली से घृणा करने लगता है और अपने दो अढ़ाई कच्चे घरों से असीम स्नेह, जहाँ उसका एकछत्र शासन हो सकता है। वह अपनी स्वतन्त्रता से प्रेम करता है, किन्तु दूसरे को स्वतंत्रता देना उसे अभीष्ट नहीं। इस दृष्टि से उसमें और आज के सच्चे 'प्रजातंत्रवादियों' में कोई अन्तर नहीं। वह न अपने पिता की परवाह करता है न किसी और की। वह अपने आपको सबसे बड़ा समझता है। उसकी इस प्रवृत्ति का दंड उसकी पत्नी यौवन में भुगतती है और वह वृद्धावस्था में (यदि वह उस समय तक जीवित रहे तो!)।

उसमें बुद्धि और दूरदर्शिता का अभाव और अपनी इच्छा के क्रियाशील व्यक्तिकरण की लालसा का आधिक्य है। किसी समस्या को बन्दूक की गोली से सुलझा लेना उसके लिए सुगम है, किन्तु उसके लिए सिरदर्द मोल लेना कठिन। उसकी महत्वाकांक्षा की सीमा नहीं, किन्तु उसे क्रियात्मक रूप देने के लिए जिस धैर्य और सन्तोष की आवश्यकता है, उसका उसके यहां सर्वथा अभाव है। यही कारण है कि वह प्रायः युवावस्था ही में परलोक की राह लेता है। उसके हृदय का क्षेत्र विशाल और मस्तिष्क का संकीर्ण है। इसी कारण उसकी मित्रता और अतिथि-सत्कार दोनों में उदारता है। उसका मस्तिष्क गर्व से पूर्ण और पेट खाली है; यही कारण है कि वह एक प्रचंड डाकू बनता है। जब उसे भिक्षा-वृत्ति और किसी द्वारा उठा ले जाए गए प्राप्त धन में चुनाव करना पड़ता है तो वह अन्तिम काम को पसन्द करता है, क्योंकि वह मनुष्य है और कीड़ा नहीं। वह अपनी सुन्दर तरुण पत्नी के फटे पुराने कपड़ों और अपने बच्चे की भूखी आंखों में देखता है तो वह दांत पीसकर बन्दूक उठाता है और अपनी पत्नी के लिए एक गज़ कपड़ा और अपने बच्चे के लिए एक टुकड़ा रोटी प्राप्त करने के लिए मृत्यु के मुँह में चला जाता है।

जब एक सामाजिक प्रणाली उसके प्रियजनों का पेट नहीं भर सकती तो वह उसे अपने घास के चप्पलों के नीचे रौंदता चला जाता है। जब एक शासन-पद्धति उसे भूखा मारकर दूसरे को भर पेट खाना देने का

निश्चय करती है तो वह इस शासन-पद्धति के शरीर को गोलियों से बेध देता है।

उसका यही गुण है, जिसकी मैं हृदय से प्रशंसा करता हूं। वह भिक्षा मांगने की अपेक्षा चोरी करना अधिक पसन्द करता है और ऐसी दशा में मैं भी यही करूँ—इसका मुझे निश्चय है। वह मनुष्य और ईश्वर के कोप का सामना करना पसन्द करता है, किन्तु दरिद्रता की लज्जा और अपमान उसे असह्य है। किसी बरबस उठाकर लाए हुए मोटे सेठ की भयभीत, विवश आँखों में देखना उसे पसन्द है, किन्तु अपने भूखे प्रियजनों की आशाभरी आँखों में वह नहीं देख सकता। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं पसन्द करता हूँ कि मनुष्य फुटपाथ पर अत्यन्त दीनता से लोटने और उन लोगों के आगे भिक्षार्थ हाथ पसारने की अपेक्षा, जिन्होंने धन-राशि के बदले अपनी आत्माएँ बेच दी हैं, डाका डाले और उसके अभियोग में सूली पर चढ़ जाए। पठान चोरी पसन्द करता है, क्योंकि उसे भिक्षा-वृत्ति से घृणा है। यही कारण है कि मैं पठान से प्रेम करता हूँ, हालाँकि वह अत्यन्त सरल और घमंडी है। अपना सिर फोड़ लेना वह पसन्द करेगा, किन्तु सुसभ्य लोगों की भाँति चन्द टकों के लिए दूसरे के हाथ उसे बेच देना किसी दशा में स्वीकार न करेगा।

यदि आप चाहते हैं कि वह सुसंस्कृत लोगों के वक्ष गोलियों से क्षत-विक्षत न करे तो आपको उसका पेट भरना होगा। वह डाके डालता है, क्योंकि वह भूखा है। एक किसान अपने पेट के लिए हल चलाता है, वकील तर्क-वितर्क करता है, पठान अपने पेट के लिए डाका डालता है। उसके सामने दूसरा कोई मार्ग नहीं। वह गोली न चलाएगा तो उसे भूखों मरना होगा, चोरी न करेगा तो भीख मांगनी होगी, यदि वह पिता के कर्तव्य पूरे न करेगा तो कायर कहलाएगा। उसके लिए दूसरा कोई उपाय नहीं।

दो सौ वर्ष से बर्तानी सरकार उसे रिश्वत देती और बिगाड़ती रही है। उसने पठान के मुल्लाओं, खानों और फ़कीरों को खरीद लिया। उस खुदा को, जिसकी वह पूजा करता था, फिरंगी ने भारतीय सोने से खरीद कर उसे

अपनी हिमाकतों की मदद के काम म लगा दिया और उससे कहा, वह न देखे, न अनुभव करे। इससे कुछ समय और किसी हद तक काम चला।

आपको यह दिखाने के लिए कि अंग्रेज़ का दयालु हृदय कैसा होता ह, मैं आपको तिराह की घाटी की एक कहानी सुनाऊंगा।

तिराह अद्भुत कहानियों और अद्भुत प्रथाओं का प्रदेश है। यह अफ़रीदियों का देश है।

क्योंकि तिराह अद्भुत कहानियों आर अद्भुत प्रथाओं का प्रदेश है, इसलिए मैं भी आपको एक अद्भुत कहानी सुनाऊगा। यहां के पठानों के यहां इतनी मनोरंजक, सरस और रंगीन घटनाएं हैं कि अपने जीवन की उकताहट आर थकन को मिटाने के लिए उन्हें कल्पित कहानियों की आवश्यता नहीं पड़ती। लीजिए, एक सच्ची कहानी सुनिए।

तिराह में मुसलमानों की दो जातियाँ हैं–सुन्नी, बहु-संख्यक हैं, और शिया, अल्प-संख्या में। ये सुन्नी जागरुक और सजीव हैं और शिया यद्यपि अल्प-संख्या में हैं, तथापि अतीव दूरदर्शी और चतुर हैं। ये दोनों सुन्नी और शिया विशुद्ध अफ़रीदी हैं, और क्योंकि ये भारत और अफ़ग़ानिस्तान के मध्य बसते ह, इसलिए इसका मोल भी उन्हें काफ़ी चुकाना पड़ता है।

जब अमानुल्लाह ने ज़रा-सा सिर उठाया और विशुद्ध पठान की भांति (जैसा कि वह था) परिणाम की परवाह किए बिना अपनी इच्छानुसार आगे बढ़ा तो गोरे साहिबों को उसका यह व्यवहार कुछ अच्छा नहीं लगा और उस समय जब अमानुल्लाह और उसकी सम्राज्ञी योरप की राजधानियों में नाच रहे थे, गोरे साहिबों में ईसाई सोने को मुक्तहस्त बहाकर अफ़ग़ानिस्तान की राजधानी में ईर्षा और आकांक्षा, भूख और अज्ञान को विनाश की एक प्रचंड बटालियन में परिवर्तित कर दिया।

तिराह के शिया अपन पड़ोसियों से अधिक बुद्धिमान् थे, क्योंकि अमानुल्लाह इस्लाम के विभिन्न संप्रदायों को एक नज़र से देखता था और पर्याप्त सहिष्णु था, इसलिए तिराह के शिया उससे प्रेम करते थे और उसका समर्थन करते थे। वे इस बात के लिए तैयार थे कि दक्षिण-पश्चिम से बढ़कर युवा राजा की रक्षा करें।

किन्तु ज्यों हीं अफ़रीदी शियों के इस संकल्प की सूचना अफ़ग़ानिस्तान पहुँची, तो न केवल वहाँ के मुल्लाओं में शोर मच गया, वरन् अफ़रीदियों में भी–शियों में नहीं, सुन्नी अफ़रीदियों में–ऐसे मुल्ला प्रकट हो गए जो शियों की निन्दा में विष-वमन करने लगे।

और उस समय जब अफ़ग़ानिस्तान के मुल्ला शाह अमानुल्लाह की पठान–विरुद्ध–ईसाई–जीवन–वृत्ति के विरोध में पवित्र क्रोध से अपनी बड़ी-बड़ी पगड़ियां और लम्बी-लम्बी डाढ़ियां हिला हिला कर नारे लगा रहे थे, तिराह में उनके साथी मुल्ला शियों की, पैग़म्बर के प्रिय दामाद हज़रत उस्मान के हत्यारों की निन्दा कर रहे थे। हज़रत उस्मान के ये प्रेमी अधिकतर उस प्रदेश से आए थे जो अंग्रेज़ी सरकार के अधीन है। शियों का नाश करनेवालों को उन ख़रीदे हुए मुल्लाओं ने स्वर्ग और हूरों की कहानियां सुनाकर उत्तेजित किया। उस रुपये क अतिरिक्त जो उन काफ़िर शियों को ठिकाने लगाने के लिए उनकी ज़ेबों में जाने को बेचैन था, स्वर्ग और हूरों की आशा भी उनके लिए पर्याप्त थी–उन्होंने अपनी बन्दूकें उठाईं और स्वर्ग तथा हूरों की खे[illegible] में चल पड़े।

उसक पश्चात् शियों का भयानक संहार शुरू हुआ। न केवल शियों के कुटुम्ब तबाह किए गए, वरन् लाखों फलों क वृक्ष, वर्षों क परिश्रम के प्रतीक बादाम और अख़रोट के वृक्ष, सहस्रों गाएँ, भेड़ें और दूसरे जानवर नष्ट कर दिए गए। जिस घाटी म शिया बसते थे, वह एकदम उजाड़ दी गई, शिया बेचारे इस हद तक नष्ट हो गए कि शाह अमानुल्लाह की सहायता को जाना वे लोग एक दम भूल गए।

शि[illegible]यों ने अपनी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता का मोल अपने खून और आंसुओं स चुकाया और अमानुल्लाह न अपनी बुद्धिमत्ता का अपने राजपाट से। अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा करने के उपलक्ष में उसने अपने एक मात्र राज्य से हाथ धोए और अफ़रीदी शियों ने अपने एक मात्र सम्राट से! और एक आदर्श की सहायतार्थ सिर उठाने की चेष्टा में शियों को अपने बच्चों, घरों, फलों, और मेवों के बाग़ों से हाथ धोने पड़े—यह पाशविकता

और क्रूरता का नग्न नृत्य किसकी विवेकशीलता की सर्वोत्कृष्ट कृति थी, इस स्कीम को ईसा के उन दयालु अनुयायिओं ने कितनी निपुणता से सम्पन्न किया, इस रक्तपात और दारुण बीभत्सता, इस अज्ञान और घृणा के नंगे नाच से किसे लाभ पहुंचा ? इसका अनुमान मैं आप पर छोड़ता हूं।

क़बायली इलाके की सहस्रों कहानियों में से यह केवल एक है। इस का शब्द शब्द सच्चा है। चाहे सुन्नियों को यह ज्ञात न हो कि किस शक्ति ने उन्हें शियों के विनाश के लिए उकसाया, किन्तु शिया भली भांति जानते हैं, किसने उन्हें बरबाद किया। चाहे कुछ पठान अमानुल्लाह खां को न बचा सके हों, किन्तु क्यों, इस बातको वे भली भांति जानते हैं।

अंग्रेज़ी सरकार के अधीन पोलिटिकल डिपार्टमेंट का एक मात्र उद्देश्य सीमान्त के बाज़ों को कौवे और गिद्ध के घृणित व्यवहार सिखाना है। इस डिपार्टमेंट ने क़बीलों के अतीव नीच और लालची व्यक्तियों को ख़रीदा और उन्हें प्रतिष्ठित बनाया, क्योंकि राजनीतिक चाल में जिस व्यक्ति को साधन बनाया जाए, उसका प्रतिष्ठित होना आवश्यक है। क़बायली प्रदेश में समस्त प्रतिष्ठा और प्रभाव ख़ान के हाथ में हैं, या मुल्ला के–एक इस जगत का शासक है, दूसरा आनेवाले संसार का !

पोलिटिकल डिपार्टमेंट ने क़बायली प्रदेश को ऐसे मुल्ला दिए जो अल्लाह के सेवकों का वेश धरकर शैतान की सेवा करने में दक्ष हैं। उन लोगों ने ख़ुदा से पठानों के अटूट प्रेम को, भाई के प्रति भाई की घृणा में परिणत कर दिया और उन्होंने उनकी बालोचित् सरलता, सत्यप्रियता और श्रद्धा को छल–कपट और दुराचार के लिए प्रयोग किया।

इस प्रकार अंग्रेज़ पठानी प्रदेश में अपनी कूट नीति और कपट-व्यवस्था में पूर्णतया सफल हुए। पठान एक दूसरे का गला काटने में इतने व्यस्त थे कि दूसरी ओर ध्यान देने का उन्हें तनिक भी अवकाश न था। ख़ून और अज्ञानता–अज्ञानता और ख़ून, समस्त प्रदेश में इसी का बोलबाला था और अंग्रेज़ी साम्राज्य सुरक्षित था, और पठान अपनी मूर्खता, धृष्टता, अज्ञानता और ख़ून से उसकी रक्षा कर रहा था।

किन्तु तभी एक नई बात हुई। इस नई बात को जानने के लिए हमें क़बायली प्रदेश, उसकी पहाड़ियों और उनके निवासियों से हटकर उस स्थल में आना पड़ेगा जो नाम मात्र को "व्यवस्थित प्रदेश" कहलाता है और जिसे उत्तर-पश्चिमीय सीमान्त प्रदेश के नाम से याद किया जाता है। इसी स्थल की उर्वर घाटी के एक छोटे से गांव मे पहले .खुदाई खिदमतगार ने जन्म लिया।

वह एक बलवान्, कुलीन और नेक वृद्ध खान और उसकी लम्बी, सुन्दर, नीली आंखोंवाली पत्नी का सबसे छोटा पांचवां बच्चा था। उसके पिता बहरामखां का अपने किसी सम्बन्धी से किसी प्रकार का झगड़ा न था (और यह बात किसी पठान खान के लिए बहुत बड़ी बात समझी जाती है), क्योंकि उसने अपने समस्त शत्रुओं को क्षमा कर दिया था। उसने कभी झूठ नहीं बोला, उसे झूठ बोलना आता ही न था। वह अपने शासक अंग्रेज़ों को पसन्द करता था, यद्यपि उनके नाम उसे कभी भी याद न होते थे। वह घोड़ों से प्रेम करता था, किन्तु स्वयं बहुत अच्छा सवार न था। वह दोष की हद तक आशावादी था और उसकी विनोद-प्रियता बहुत सुलझी हुई थी। वह बेहद दयानतदार था और इसीलिए साधारण लोग उससे प्रेम करते थे।

बहरामखाँ लम्बी आयु तक जीवित रहे, खेती-बाड़ी करते रहे, और मौज उड़ाते रहे। उनकी दो लड़कियों के विवाह बहुत अच्छी जगह हुए और बड़े सफल रहे। उनका सबसे बड़ा लड़का अंग्रेज़ी सेना में कैप्टन के पद पर नियुक्त हुआ (लन्दन में जब वह पढ़ रहा था, वहीं से भरती हो गया था) और गत-युद्ध में बड़ी वीरता से लड़ा। उनके छोटे लड़के ने सेना में कमीशन लेना अस्वीकार कर दिया और धर्म तथा खेती-बाड़ी के काम को पसन्द किया। बहरामखाँ इस प्रकार की बात को न समझ सके, किन्तु उन्होंने छोटे लड़के को समझना ही छोड़ दिया था। सबसे छोटा बच्चा होने के कारण वह मां को बहुत प्रिय था। लड़का ६ फुट, तीन इंच लम्बा, शुद्ध और पवित्र, समवेदनाशील और दयालु था। वह अपने वृद्ध पिता से असीम स्नेह करता था और जो कुछ वह करता उसके पक्ष में विचित्र और

पवित्र युक्तियां देता था। वृद्ध ख़ान उसकी हर बात को क्षमा कर देता था और उसने मिलिटरी में कमीशन लेने के उसके इन्कार को भी क्षमा कर दिया था। इसके अतिरिक्त उसकी सुन्दर पत्नी भी अपने इस बच्चे का पक्ष लेती और जो कुछ भी वह करता, उसके महत्व और यथार्थता को समझ जाती। वह उसे अपने पति की अपेक्षा अधिक स ़ती। और जब वह कहती कि वह जो कछ करता है, ठीक करता ह, तो खान उसकी बात रद न करता। बहरामखां ने अपने इस लड़के को एक गांव दे दिया, ताकि वह उसका प्रबन्ध करे, जिस लड़की से विवाह करने की इच्छा उसने प्रकट की, उससे उसका विवाह कर दिया और आशा की कि वह अपने विचित्र विलक्षण विचार छोड़ देगा और टिक कर बैठ जाएगा।

नवयुवक अपनी पत्नी से असीम स्नेह करता था–वह एक प्राचीन प्रतिष्ठित वंश से सम्बन्धित थी। उसका पालन पोषण बहुत अच्छे ढंग से हुआ था। वह मृदुल स्वभाव और हँसमुख लड़की थी, किन्तु अब भी युवक को शान्ति न मिली। उसकी भ्रांति कम न हुई। उसके दो बच्चे हो गए। उसे बच्चों से बड़ा प्यार था, किन्तु कभी कभी जब वह आग के समीप बैठा बच्चों को खेला रहा होता तो सहसा वह बच्चों का खेलता छोड़ देता और दूर शून्य में देखने लगता। उसकी हँसमुख पत्नी उसके इन मनोभावों को समझती थी और उनसे घृणा करती थी, क्योंकि प्रत्येक स्त्री अपने साथी को समूचा अपना लेना चाहती है। वह यह अच्छी तरह जानती थी कि कोई न कोई ऐसी वस्तु अवश्य है जिसके कारण आग के समीप बैठा उसका यह सुन्दर पति उसकी आंखों की मादकता और बच्चों के क़हक़हों को भूल जाता है।

नवयुवक अब्दुल गफ्फ़ार ख़ां की उन दीर्घ नीरवताओं और उनके दुर्बोध भावों को क्रियारूप और शक्ति में परिणत होते देखने के लिए उनकी वह प्रफुल्लवदना, प्रसन्न-चित्त पत्नी अधिक समय जीवित न रही। वह पच्चीस वर्ष की भी न थी, जब वह चल बसी। उन्होंने उस फूलों से ढक दिया और उसे उसके विवाह के जोड़े में क़ब्रिस्तान में ले गए। अपने पीछे वह दो छोटे छोटे बच्चे छोड़ गई, जिनकी आँखों में

शैशव की सरल निरपेक्षा का स्थान विह्वलता और भय ने ले लिया था। वे मृत्यु को न समझते थे, किन्तु उसकी भीषणता की गंध पा गये थे।

अब्दुल ग़फ़्फ़ार की आकुलता उनकी जीवन-संगिनी की मृत्यु के पश्चात् और भी बढ़ गई। पहला महायुद्ध योरप में प्रारम्भ हो गया था और अपने साथ वह भारत के लिए प्रारम्भ मे उन्नति का पाखंडभरा वचन और अन्त में इन्फ्लुएन्ज़ा और महामारी लाया। अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ ने अपने बच्चों को अपनी मां की स्निग्ध देखभाल में छोड़ दिया आर अपने विषाद को जनसाधारण की सेवा के असीम सागर में डुबा दिया।

उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य ढूंढ़ निकाला। अपने लोगों के लिए एक नये प्रेमभाव से उनका मन ओतप्रोत हो गया। विचार और चिन्तन के पाश्चात् उन्होंने निश्चित किया कि पठानों को संयुक्त, सुशिक्षित, सुसंस्कृत और सुसंगठित करना अत्यावश्यक है। उन्होंने उनसे इस विषय में बातचीत करना प्रारम्भ किया। उनका ध्यान उस अंधकार और अज्ञानता की आर दिलाया जो उनके जीवन में घर किए हुए थे। उन्होंने पठान में सोचने का स्वभाव डालने की चेष्टा की।

उन्हें भारी सफलता मिली, किन्तु उनके प्राण संकट में पड़ गए। हुआ यह कि हुशनागढ़ के सरल खान एक दिन बड़ी मस्जिद में एकत्र हुए और उन्होंने घोषणा की कि अब्दुल ग़फ़्फ़ार हमारा 'बेताज बादशाह' है।

इस बात की सूचना मिलते ही अंग्रेजी सरकार के स्थानीय प्रतिनिधि अपनी समस्त परिहासशीलता खो बैठे (वह परिहासशीलता जो सदैव लंदन के "पंच" में दखने को मिलती है, किन्तु जिसकी झलक अंग्रेजा की आंखों में कदाचित् ही दिखाई देती है) (Sense of humour)। असिस्टैंट कमिश्नर सेना और तोपों के साथ हुशनागढ़ पहुँचा। गांव को उसने घेर लिया, गांव के निवासियों के शस्त्र छीन लिए और उन पर पैंसेठ हज़ार रुपया दंड लगा दिया। उसने टूटी फूटी, उपहास-जनक पश्तो में उन्हें अंग्रेज की महानता और शक्ति पर व्याख्यान दिया और दण्ड की प्राप्ति तक साठ प्रतिष्ठित वृद्ध ख़ानों को शरीर-बंधक (Hostages) के रूप में ल गया। उन वृद्ध सम्मानित पठान ख़ानों

में बहरामखां भी थे, जिनकी आयु उस समय ७५ वर्ष की थी और जो जीवन भर सरकार के आज्ञाकारी रहे थे। दूसरे भी उनकी भांति सरल थे और किसी ने भी किसी प्रकार का विद्रोह न किया था।

किन्तु उन सबको इस अपमान पर क्रोध आया, अपनी विवशता से उन्हें घृणा हुई और पहली बार उन्होंने अनुभव किया कि उनकी दशा .गुलामों से किसी प्रकार अच्छी नहीं।

क्योंकि वे सबके सब शुद्ध पठान थे, इसलिए उन्होंने किसी प्रकार इस ग़लतफ़हमी को दूर करने की चेष्टा नहीं की। और फिर वे इतने क्रुद्ध थे कि सिवा अंग्रेज़ी सरकार पर धिक्कार भेजने के उन्हें कुछ न सूझा। उन्होंने अपने दांत पीसे और अंग्रेज से कह दिया, "अच्छा, यदि तुम हमें राजविद्रोही समझते हो तो हम राजविद्रोही हैं। जो तुमसे बन पड़े, कर लो।"

अब्दुल ग़फ्फ़ार खां फांसी के तख्ते पर चढ़ते चढ़ते बचे। इस घटना से उनका नाम "बादशाह खां" पड़ गया और उस समय से पठान उन्हें इसी नाम से स्मरण करते हैं।

इस घटना ने उन्हें भयभीत करने के बजाय और शक्ति प्रदान की। उनके शिष्यों में वृद्धि हो गई और उन्हें बड़ा नाम मिला, यहां तक कि वृद्ध बहरामखां भी अंग्रेजों की निन्दा करने लगे और क्योंकि उनके बेटे ने अंग्रेज़ को परेशान कर दिया था, इसलिए वे उससे प्रेम करने लगे और उसके काम को प्रशंसा की दृष्टि से देखने लगे।

बादशाह खां ने एक स्कूल खोला और एक संघ की नींव रखी, जिसका नाम "पठान रिफ़ारमर" रखा। उसके उद्देश विशुद्ध सामाजिक और सांस्कृतिक थे। राजनीति के बदले इस सभा का काम सामाजिक प्रचार था, किन्तु इसके बावजूद सरकार ने अब्दुल ग़फ्फ़ार खां को पकड़कर तीन वर्ष कठिन-कारावास का दण्ड दे दिया।

जब बादशाह खां ने कहा कि शिक्षा देना तो कोई अपराध नहीं और वह तो पठान को शिक्षित बनाकर शासकों ही की सहायता कर रहे हैं तो शासकों ने उत्तर दिया की इस बात का क्या विश्वास है कि यह संघ सरकार और उसके लाभ के विरुद्ध प्रयुक्त न किया जाएगा ?

"आप मुझ पर विश्वास रखिए," बादशाह ख़ां ने उत्तर दिया।

"कदापि नहीं," सामर्थ्यशाली उच्चपदाधिकारी ने कहा, "तुम्हें क्षमा मांगनी होगी और ज़मानत देनी होगी कि तुम भविष्य में ऐसा काम न करोगे। इस ज़मानत और क्षमा-प्रार्थना के पश्चात् तुम्हें मुक्त कर दिया जाएगा।"

"क्या मैं इस बात की ज़मानत दूं कि मैं अपने भाइयों से प्रेम और उनकी सेवा न करूंगा?" बादशाह ख़ां ने आश्चर्यान्वित होकर कहा। उन्होंने मिशन स्कूल में अंग्रेज़ के ईसाईपने और न्याय-प्रियता और उदारता के विषय में बहुत कुछ पढ़ा था और शासकों की यह बात सुनकर वे विस्मित रह गए।

"यह सेवा नहीं, यह विद्रोह है," सामर्थ्यशाली उच्चपदाधिकारी ने कहा (शायद बादशाह ख़ां को समझाने से अधिक अपनी आत्मा को शान्ति देने के लिए!), और इस जादूभरे वाक्य से बादशाह ख़ां को तीन वर्ष कठिन-कारावास का दण्ड दे दिया और अपने आप को अधिक वेतन और अगले वर्ष उन्नति का अधिकारी बना लिया!

इस बीच में स्कूल चलता रहा और संघ दिन प्रति दिन संगठित और क्रियाशील होता गया। तीन दीर्घ वर्ष व्यतीत हो गए बादशाह ख़ां कारावास से बहुत दुर्बल और श्रान्त लौटे, किन्तु उनकी आत्मा इस्पात ऐसी दृढ़ हो गई थी। उनकी भूरी आंखों को इस सारी यंत्रणा पर गर्व था। उनमें अलौकिक दृढ़संकल्प और गम्भीरता भर गई थी। उन्होंने अपने मातृ-हीन बच्चों को अपने आलिंगन में ले लिया और कांपती हुई अंगुलियों से उनके स्निग्ध उत्तेजित गालों को प्यार किया।

बहरामख़ां के हर्ष का पारावार न था। उन्होंने हज़ारों अतिथियों को चाय पिलाई और अंग्रेज़ों तथा उनकी दादियों पर 'मधुर वचनों' की वर्षा की।

सहस्रों की संख्या में पठान अपने इस 'बेताज बादशाह' का स्वागत करने को उमड़ पड़े। लड़कों ने प्रसन्नता और श्रद्धा की दृष्टि से उन्हें देखा और लड़कियों ने उनकी प्रशंसा में गीत गाए। पठानों को बादशाह ख़ां

के रूप में एक प्रबल विद्रोही मिल गया था। पठानों का वह साहस कि एक विद्रोही की पूजा करें! उनको जल्द ही इस धृष्टता का दंड देना चाहिए, किन्तु इससे पहले उस मूर्ख महान व्यक्ति को उनके बीच में से हटा देना चाहिए, शक्तिशाली उच्च शासकों ने सोचा और क्योंकि बादशाह ख़ाँ इतने महान् थे कि अपने आप को गिरफ्तारी से बचाने को सोच तक न सकते थे और उन्हें बड़ी सुगमता से पकड़ा जा सकता था, वे जो भी काम करते, बीच खेत करते थे, और सरकार और शैतान की भी परवाह न करते थे, इसलिए उन्हें सरकार ने फिर कारावास में बन्द कर दिया, इस आशा से कि उन्हें विदित हो जायगा कि उनका लाभ किस बात में है, उन्हें एकान्त कारावास का दंड दिया गया। उनके हाथों में जंज़ीरें और पावों में बेड़ियां डाली गईं। उन्हें धूल, मलिनता, भूख, जुओं और खटमलों-का शिकार होना पड़ा, और अंग्रेज सरकार के तुच्छतम् भृत्यों के पदाघात, उपहास और व्यंग्य सहने पड़े; किन्तु उनके माथे पर बल तक नहीं पड़े। वे प्रतिदिन हाथ से बीस सेर अनाज पीसते और कभी शिकायत का एक शब्द भी ज़बान पर न लाते और बन्दियों में सदैव आदर्श बने रहते। उन्होंने अपनी भाजी में कीड़ों की शिकायत कभी नहीं की और जेल से और बड़े अफ़सरों से कुछ ऐसी दूरस्थ अवज्ञा का व्यवहार किया जो आदर के साथ मिलता जुलता था। अपनी शक्ति के बावजूद वे दयालु थे और अपने शत्रुओं के साथ भी नम्रता का वर्ताव करते थे। वे प्रत्येक का प्रत्येक अपराध क्षमा कर देते। उनके धैर्य की सीमा न थी। अपने दुःख को मुस्कान और अपनी पीड़ा को विनोद के पद में छिपाना उन्हें आता था।

जब वे दूसरी बार कारावास से लौटे तो उन्होंने अपना पहला राजनीतिक आन्दोलन प्रारम्भ किया और सीमान्त प्रदेश के लिए सम्पूर्ण सुधार की मांग की।

९८ प्रतिशित पठान अशिक्षित हैं। उनके लिए कालाअक्षर भैंस बराबर है। इसलिए बादशाह ख़ां ने सीमान्त के प्रत्येक गांव का परिभ्रमण किया। लोगों को उनकी दुर्दशा के कारण बताए और सुधार के विषय में उन्हे सब बातें बताईं।

बादशाह खां के साथियों ने देखा कि श्वेत वस्त्र शीघ्र ही मैले हो जाते हैं। अत: उनका एक साथी स्थानीय चमड़े की फैक्टरी में से जो लाल रंग तैयार किया जाता है, उसमें अपने कपड़े रँग लाया। कपड़े कालिमा-यय रक्त-वर्ण हो गए। शेष ने भी उसका अनुसरण किया। दूसरी बार जब बादशाह खां अपने साथियों के साथ गए तो उनके वस्त्रों के उस असाधारण रंग ने लोगों का ध्यान तुरन्त अपनी ओर आकर्षित किया। वे अपने सब काम छोड़कर इन लाल वेशभूषा धारियों को एक नज़र देखने को भागे, और एक बार आए कि फिर उन्हीं के हो गए। बादशाह ख़ाँ ने अपने नये कर्मचारियों के लिए, जिन्हें उन्होने 'खुदाई खिदमतगार' का नाम दिया, यही रंग अपना लिया। उनका उद्देश्य था—स्वतंत्रता और आदर्श वाक्य था—सेवा।

मैं आप को पठान की राजनीति के विषय में कुछ बताना चाहता था और मैंने बादशाह खां का कुछ लम्बा रेखा–चित्र खींच दिया, किन्तु वास्तव में पठान की सारी राजनीति इसी तक सीमित है। बादशाह खां पठानों को भली भांति समझते हैं और पठान उन्हें, और आप जब तक पठान न हों, दोनों को नहीं समझ सकते !

अब बादशाह खां वृद्ध हो गए हैं। उनकी डाढी वर्फ़-सी श्वेत और हाथ सुन्दर और लम्ब हैं। अब आप कभी उन्हें मिलें तो उनकी करुणापूर्ण भूरी भूरी आंखों में एक बार देखें और आप को पठान की राजनीति के विषय में इतना समझ में आ जाएगा जितना मैं सहस्र परिच्छेद लिखकर भी नहीं बता सकता, क्योंकि जिस प्रकार चांदनी और आकाश-गंगा को शब्दो में व्यक्त नहीं किया जा सकता उसी प्रकार मनुष्य में जो सुन्दरतम् और पवित्रतम प्रवृत्तियां हैं, उनका व्यक्तिकरण भी असम्भव है। प्रेम और दयाशीलता के भाव को शब्दों की बेड़ियों में बंधी नहीं किया जा सकता। बादशाह खां ने क्रियात्मक अनुभव के पश्चात् जान लिया है कि एक देश में ऐटम बम उतना नष्ट–भ्रष्ट नहीं कर सकते, जितना प्रेम एक क्षण में बना सकता है, कि दया की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है, कि सबसे बड़ा बलवान् वह है जो सत्य बोलता है। जीवन की

दिलचस्पियों और बच्चों की निश्छल दृष्टि से एक पवित्र स्वप्न कहीं अधिक मूल्यवान् है। यही बातें उन्होंने पठान को सिखाई हैं।

आज कल ईसाई अंग्रेज़ अपनी पुरानी कूटनीति-धर्म को प्रयोग में ला रहा है। मशीनगनों, एकान्त-कारावास और गैस के बदले उसने सफ़ेद डाढ़ियों और बड़ी-बड़ी पगड़ियों और मालाओं की सेवाएं प्राप्त की हैं। आज भारत के दंड-विधायक कोष के पृष्ठ उलटने के बदले, उसी स्वामी की सेवा में, आवेश से कांपती हुई अँगुलियां क़ुरान के पन्ने उलट रही हैं। शैतान के भय के बजाय हिन्दू का भय लोगों के दिलों में बिठाया जा रहा है। सदयता का चोला पहने हुए धूर्त ईसाई अपने गुलाम के मन को विष से भरने की अन्तिम सिरतोड़ कोशिश में संलग्न है, क्योंकि वह उसे छोड़ना नहीं चाहता—इसी खेल को अंग्रेज़ 'क्रिकेट' का नाम देते हैं और भारत-वासी 'राजनीति' का!
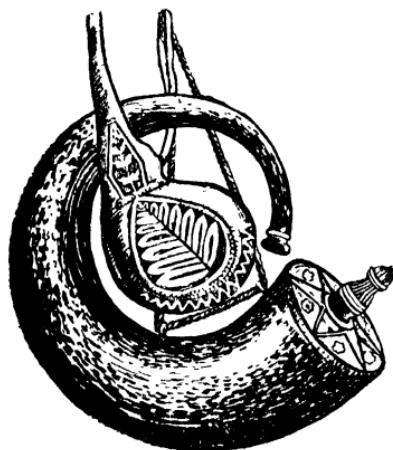
उपसंहार

मेरी कहानी समाप्ति पर आ गई। मेरा विचार है, आपने इसे सुनने में उतना ही आनन्द पाया होगा जितना मैंने इसे सुनाने में। पढ़ना, सुनने ही का सुसंस्कृत ढंग है और लिखना, बोलने का जटिल रूप।

मैंने आप को अपने लोगों के विषय में कुछ परिचय देने की चेष्टा की है। निष्पक्ष, भावनारहित, तास्सुब-हीन दृष्टि कोण से नहीं, वरन् पक्ष और भावना से भरे दृष्टिकोण से, इसलिए कि मैं पत्थर नहीं और शत-प्रति-शत निष्पक्ष केवल पत्थर ही हो सकता है!

विचार तास्सुब के व्यक्तिकरण ही का दूसरा नाम है। प्रेरणा भावना से उच्च है और इसलिए विचार से भी परे है और भावना और तास्सुब मनुष्य को घुट्टी ही में मिल जाते हैं। जितना शीघ्र मनुष्य इसे मान ले, उतना ही अच्छा है। जिस समय मैं किसी जज को सिर पर बड़ा-सा 'विग' लगाए और मुख पर गम्भीरता का आवरण चढ़ाए "निष्पक्ष न्याय" करते देखता हूं तो अनायास कहकहा लगाने को जी चाहता है। मैं ऐसा नहीं कर सकता हूं। मैं पठान हूं और सत्यवादी हूं, इसलिए मैं स्पष्टतया इस बात को स्वीकार कर लूंगा कि मैं अपने देशवासियों के पक्ष में भावुक हूं। यदि ऐसा न होता तो मुझे अपने आप से घृणा होती।

मैंने आपकी सेवा में अपना खींचा हुआ पठान का चित्र उपस्थित किया है, दूसरा कोई चित्र मैं कैसे दिखा सकता हूं? मैं पठान से उसकी हत्याओं और अत्याचार, उसकी भूख और अज्ञान के बावजूद स्नेह करता हूं, क्योंकि वह सिद्धान्त के हेतु हत्या करता है और इस बात की चिन्ता नहीं करता कि कौन उसे 'हत्या' का नाम देता है। वह सबसे बड़ा प्रजा-तंत्रवादी है, क्योंकि उसका कथन है—"पठान प्राकृतिक रूप से उगानेवाले

गेहूं के पौधों की भांति हैं--वे सब एक ही दिन उत्पन्न हुए और सब एक ही जैसे हैं।"

जब हम ख़ुदाई ख़िदमतगारों के आन्दोलन में किसी पठान क़साई या जुलाहे के कंधे पर जनरैल का बिल्ला लगाते हैं तो वह कभी लज्जा से लाल नहीं होता। वह केवल हँस देता है। पठान के हाथ कितने भी मलिन और खुरदरे क्यों न हों, वह उन्हें सम्राट से मिलाने के लिए बढ़ा देगा और उसके दस्तरख़ान पर कितना भी तुच्छ और थोड़ा खाना क्यों न हो, वह राजाधिराज को भी आमन्त्रित करने में न हिचकिचाएगा।

"इन आंखों में भरी स्निग्धता को देखो," उसकी आँखें अपने अतिथि से कहती हैं, "बाजरे की इस मोटी रोटी की ओर ध्यान न दो!"

किन्तु, इसके अतिरिक्त सबसे बड़ी बात जिसके कारण मैं उससे स्नेह करता हूं, यह है कि जब वह लड़ने और मरने जाता है तो हाथ मुँह धोता है, अपनी डाढ़ी को तेल लगाता है और बालों को सुवासित करता है, और अपने विशिष्टतम् वस्त्र धारण करता है। सरल पठान! चाहता है कि मृत्यु के बाद जब वह स्वर्ग में जाए तो हूरें उससे घृणा न करें। उसका विचार है कि जैसे वह स्वयं गन्दे मैले मुख को पसन्द नहीं करता, ख़ुदा भी गन्दे मुख से घृणा करता है। इसलिए वह लड़ाई पर जाने से पहले उसे धो लेता है।

वह कहता है—अल्लाह!
उसे प्यार करता है, ख़ुश उस पै होता है
जो हँसते गाते
मधुर मौत की गोद में जा पहुंचता
औ' कहता है—कायर
रोते हैं औ' रातदिन भार ढोते हैं
लेकिन लड़ाके
ज़न्नत में जाते हैं-सीधे।

मैं निःसंदेह उसका पक्षपाती हूं और मैं समझता हूं आप भी अब कुछ न कुछ उसके पक्ष में अवश्य होगए होंगे।

हमारे हिन्दी–प्रकाशन

प्रकाशित :

१. **निशानियां** : (प्रेम–कहानियां) लेखक : **उपेन्द्रनाथ अश्क**; सफे १७४ ; कीमत २॥≈ रु.

२. **हमारी रोटी की समस्या** : (खाद्य और किसानों की बुनियादी समस्याओं पर विचार) लेखक : **डॉ. जगदीशचंद्र जैन**; सफे ७२; कीमत १२ आने.

३. **रोज़ा लुक्ज़ेम्बुर्ग** : (लेनिन के समकालीन जर्मनी की श्रेष्ठतम समाजवादी महिला 'रोजा लुक्जेम्बुर्ग' का जीवन–चरित्र और उनकी समाजवादी विचार–धारा) लेखक : **श्री रामवृक्ष बेनीपुरी**; भूमिका : **जयप्रकाश नारायण**; सफे १९४; कीमत ३। रु.

४. **स्रोतस्विनी** : (पद्य–संग्रह) लेखक : **अंबिका प्रसाद वर्मा, 'दिव्य'**, भूमिका : **बनारसीदास चतुर्वेदी**; सफे १०९; कीमत १॥। रु.

५ **आज़ाद वतन** : (१९४२ में ज़ब्त हुए राष्ट्रीय गानें,) लेखक : **सैयद क़ासिम अली**, भूमिका : **रफ़ी अहमद क़िदवाई**, यातायात मंत्री, भारत-सरकार; सफे ६९; कीमत १। रु.

६. **सप्त-किरण** : (सात एकांकी) लेखक : डॉ. **रामकुमार वर्मा**, सफे १७६. कीमत ३ रु.

प्रेस में :

१. **जीवन–प्रभात** : (उपन्यास) बंगाली—लेखक : **रमेश चन्द्र दत्त**, अनुवादक : **रूपनारायण पांडे**; सफे लगभग ३००.

२. **आहुति** : (कहानी–संग्रह) लेखक : **इलाचंद्र जोशी**, सफे लगभग २००.

३. **इन्दुमती** : (उपन्यास) लेखक : **सेठ गोविन्ददास**, सफे लगभग १०००

४. **तूफ़ान से पहले** : (एकांकी) लेखक : **उपेंद्रनाथ अश्क**, सफे लगभग २००.

५. **तुलसी का घर–बार** : लेखक : **प्रो. रामदत्त भारद्वाज**, सफे लगभग ३००

६. **निशा गीत** (उपन्यास) लेखक : **ए. जी. शेवड़े**, सफे लगभग २००

७. **लेख-संग्रह** (**विभिन्न नेताओं और लेखकों द्वारा लिखे हुए**) सफे लगभग ८०